जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२८ अंक -१० जून २०२६ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ३६ मूल्य - १५० रूपए प्रति

जन्म
४ जून १९५७
सियाना, राजस्थान
ज्येष्ठ सुदी ७ संवत २०१४

दीक्षा
२३ जून १९८०
द्वितीय ज्येष्ठ सुदी १०
मोहनखेड़ा महातीर्थ
आचार्यदेवेश विद्याचंद सूरीश्वर जी
के कर कमलों द्वारा

देवलोक गमन
४ जून २०२१
मोहनखेड़ा तीर्थ, राजगढ़,
धार, मध्यप्रदेश

जैन एकता के महाप्रवर्तक आचार्य देवेश श्री ऋषभचन्द्र सूरीश्वर जी म.सा. के चरणों में कोटिशः नमन

पू. पिताश्री
स्व. श्री धनराजजी

पू. मातुश्री
स्व. कमलाबेन

धुम्बडिया (राज) निवासी शा. बाबुलालजी धनराजजी डोडीया गाँधी परिवार
श्रीमती सुशीलाबेन बाबुलालजी डोडीया गाँधी
पुत्र-पुत्रवधु : जयंत-ममता, शैलेष-मंदाकिनी पौत्र-पौत्री : कुशी, कियाश, झील, क्रिश
बेटा-पोता : धनराजजी हरजीजी डोडीया गाँधी परिवार

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

पधारो म्हारे देश

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मेरा राजस्थान

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना

भारत का एक राज्य राजस्थान का एक नगर

1 प्रति ₹ 100/- **सोजत** 1 प्रति ₹ 100/-

के इतिहास की प्रति मंगवाने के लिए संपर्क करें:- 022-4015-8018

सम्पादक

बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट

विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क १२००/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय भारत! जय पश्चिम बंगाल! जय गौमाता!

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

12A Reg No. AAPCM0514R25MB01 / 80G Reg No. AAPCM0514R25MB02 / CSR Reg No. CSR00101842

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

Supported By
Rajasthan Foundation
Kolkata Chapter

द्वारा आयोजित

28th JUNE 2026

AT Kolkata

We Meet at DHONO DHANYO Auditorium, Alipore

From 11A.M.

भारतीय सांस्कृतिक समागम

राष्ट्रमाता बनें
निवेदक: मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारत का एक राज्य पश्चिम बंगाल की राजधानी 'कोलकात्ता' में स्थापित
'धनोधान्य' अलीपुर सभागार में २८ जून २०२६ रविवार को
भव्यतिभव्य भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

मैं भारत हूँ

DHONO DHANYO

संरक्षक व मार्गदर्शक

स्वामी गोविंद देव गिरीजी महाराज
कोषाध्यक्ष
श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र

Media Partner
सन्मार्ग
खबरें अनेक सच्चाई एक
sanmarg.in

sanmarg NETWORK

Event By
anand
Events • Experiences

भव्यतिभव्य, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक कार्यक्रम के साथ B2B का आयोजन
नृत्य, गीत, संगीत के साथ भारतीय व्यंजन का भी रहेगा संगम

अंतराष्ट्रीय पदाधिकारी

राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	अध्यक्ष राजस्थान फाउंडेशन
बिजय कुमार जैन, मुंबई	शोभा सादानी, कोलकाता	डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा	निशा लड्ढा, कोलकाता	सुशीला पुगलिया, कोलकाता	संतोष कुमार पुरोहित, कोलकाता चैप्टर
मो. 9322307908	मो. 8910628944	मो. 9414183919	मो. 9830224300	मो. 8617203712	मो. 93228 66476
राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री	राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	संगठन मंत्री	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
रवि जैन, मुंबई	वर्षा मूँधड़ा, कोलकाता	मंजू अग्रवाल, पुणे	अनुपमा शर्मा (दाधीच), मुंबई	किशोर जैन, लंदन, यूके	अरूण मूँधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका
मो. 81088435715	मो. 9874272916	मो. 8806751782	मो. 9702205252	मो. 044 (770) 3827595	मो. 01(919)610-7106

कोलकत्ता कार्यक्रम के प्रमुख पदाधिकारी

'एक राष्ट्र-एक नाम 'BHARAT' प्रवेश आमंत्रण कार्ड द्वारा गौमाता बनें राष्ट्रमाता

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

Tariff Card

Monthly Magazine
JINAGAM

Reader Ship
17,000

Readers
All Jains

Release Date
10th date of Every Month

Magazine Size
A4

Print Area
19cm x 24 cm

Print in
Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2022

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	55,000/	+ 5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	33,000/	+ 5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	35,000/	+ 5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	31,000/-	+ 5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	32,000/-	+ 5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	40,000/-	+ 5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	8,000/-	+ 5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	22,000/-	+ 5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	12,000/-	+ 5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	6,000/-	+ 5% GST

* Per Insertion

जिनागम द्वारा अपने व्यापार को बढायें अपने आप को समस्त जैन समाज तक पहुचायें

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

अगला अंक

जैन एकता

श्री महाप्रज्ञ 'तेरापंथ' के थे भास्कर जैन जगत सदा वंदन हे गणरत्नाकर!

आचार्य महाप्रज्ञजी के जन्म पर्व पर

कोटि-कोटि वंदन

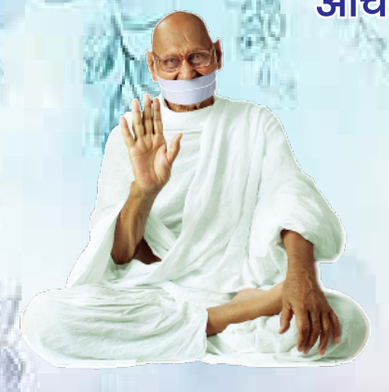

Sushila Devi
Rajesh Babita
Kkavya Naman Choraria

KBC INVESTMENTS

(Deals in Shares and Securities)

Kolkata- 700001

अणुव्रत प्रेरक गुरूवर महाप्रज्ञ जी के जन्म पर्व पर कोटि-कोटि वंदन

Late Hansraj Choraria Late Bijaya Devi Choraria

Narpat - Indira Devi Choraria
Sunil - Kusum Choraria
Rahul - Purwa Choraria
Jyoti - Dattu Choraria
Prashant - Vartika Choraria

Sajjan Devi Singhi
Sushila Devi - Sampatraj Doshi
Pushpa Devi - Dalamchand Chajjer
Santosh - Bimal Bothra
Chetna - Manish Baid
Payal - Vishal Bothra

Vivaan, Devya, Atharva, Agastya

Dhanvika,Devanshi,Vyom, Vedansh,Sanvi

With best compliments from:

Narpat Singh Sunil Kumar Choraria

Sujangarh / Bangalore

P C FARM

#209, EMBASSY CENTRE, #11, CRESCENT ROAD, BENGALURU - 560 001

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

२९ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२८, अंक १०, जून २०२६

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय
सम्पादक-बिजय कुमार जैन
जिनागम
समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका
परस्परोपग्रहो जीवानाम्

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

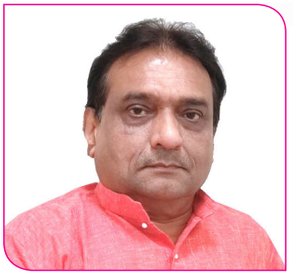

सम्पादक - बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
सह संपादक डॉ. अल्पना गंगवाल, मालेगांव,
मो: ९३६९२ ५३११३
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मो: ९७०२२ ०५२५२

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल सदस्यता की राशि का भुगतान नीचे दिये गए बैंक में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

श्वेताम्बर दिगम्बर • **सम्पादकीय** • दिगम्बर श्वेताम्बर

तेरापंथ धर्म के ही नहीं विश्व धर्म के आचार्य महाप्रज्ञ जी के चरणों में कोटिशः नमन

मुझे याद है वह पल/दिवस जब मुझे भी आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के दर्शन का मौका मिला, उनसे वार्तालाप का मौका मिला, आशीर्वाद लेने का मौका मिला, मन ही नहीं जीवन भी स्वर्गमयी हो गया, समाज व देश के लिए कुछ कर दिखाने की राह प्रशस्त हुई, चल पड़ा उस राह पर, जिसकी मंजिल बहुत ही कठिन था पर जरूरी भी था कि मैं जिन शासन को बता सकूं कि 'मैं जैन हूं' जिनशासन मेरा है, इसलिए मेरा भी कुछ कर्तव्य बनता है कि जिनशासन के लिए मुझे भी कुछ करना चाहिए, जिन शासन के आगमों की भावनाओं को विश्व तक पहुंचाना चाहिए, जिन शासन प्रेमियों को संगठित करना चाहिए, जागरूक करना चाहिए की जिन शासन हमारा है, हमारी पहचान है और उसी पहचान को अतिविशिष्ट बनाना चाहिए।

मैंने हमेशा कहा है, लिखा भी है कि बिजय! तू अकेला चला है, लेकिन एक दिन पूरा कारवां तेरे साथ होगा, तभी तो एक अतिविशिष्ट नारा जिनशासन के प्रेमियों को दे डाला 'जैन एकता' का...

हम सभी जानते भी हैं कि संगठन में शक्ति होती है और उस शक्ति को मजबूत करने के लिए समस्त जैन पंथों के अनुयायियों की विश्व प्रसिद्ध 'जिनागम' पत्रिका के द्वारा कहना शुरू कर दिया कि ना हम दिगम्बर ना हम श्वेताम्बर हम सभी जैन हैं।

क्योंकि सभी का एक ही मंत्र 'णमोकार' है, जो कि हम सभी को प्यारा भी है। आज यह नारा हम हर जिनशासन प्रेमियों की धड़कन बन चुका है, बस दिलों में समाहित होने की जरूरत मात्र है, हमारे परम पूजनीय साधु-संतों के आशीर्वाद की जरूरत भर है, आज हमारी यानी की जिन शासन की युवा पीढ़ी कहने भी लगी है कि हम सभी 'जैन' हैं, दिगम्बर-श्वेताम्बर तो मात्र आमनायें हैं, २४ तीर्थंकर हम सभी के एक हैं, हम सब मिलकर एक दूसरे का साथ दें, साथ निभाएं, हर दूसरे का सम्मान करें, अपने गोत्र के साथ 'जैन' भी लिखें और मात्र 'जैन' बने रहें, क्योंकि दिगम्बर, श्वेताम्बर मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी आदि-आदि यह तो सभी आमनाएं हैं, पूजा पद्धति जरूर भिन्न है, लेकिन हम सभी अहिंसा प्रेमी हैं, जैन हैं।

समाज के साथ 'भारत मां' ने भी हमें बहुत कुछ दिया है, हमारे देश 'भारत' को भी हमें विश्व में सम्मान दिलाना है, हमारे देश 'भारत' के साथ गुलामी का नाम जो कि प्रतीक स्वरूप INDIA आज भी हमसे जुड़ा हुआ है, उसे विलुप्त करवाना है, बताना है कि हमारे देश का नाम 'भारत' है ताकि १४२ करोड़ भारतीयों की मां भारती विश्व को कह सके कि 'मैं भारत हूं'।

साथ दें, सहयोग दें, विश्व में 'भारत' का सम्मान बढ़ाने के लिए मार्गदर्शन दें, इसी अपेक्षा के साथ, अगले महीने यानी जुलाई २०२६ को चातुर्मास पर्व के स्वागत के साथ फिर मिलूंगा।

जय जिनेंद्र! जय भारत!

SBI	HDFC BANK
for payment	for payment

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान
हिंदी को दिलाओ राष्ट्रभाषा का सम्मान
मैं भारत हूँ फाउंडेशन

India's Leading Brand in Ghee and Oil

NAKODA®

Pure Ghee, Edible Oils & More...

NAtural KhaO... Dilse Apnao...™

3T YUMM™

Taste • Tradition • Trust

SATTVIK VERIFIED — QUALITY ASSURANCE — VEGETERIAN & JAIN

FREE HOME DELIVERY

Desi PROTEIN SHAKE

also available on JioMart | Flipkart | amazon | www.nakodagheetel.com

89288 82457 / 85915 62269 / 89285 86181 / 91377 56585

HEALTHY & CHATPATA SATTU

NAKODA TRUSTED QUALITY OVER 35 YEARS

M/s. KEWALCHAND VINODKUMAR

K.B. Products Pvt. Ltd.

Customer Care: +91 9819475175 | info@gheetel.com

/nakodagheetel | An ISO22000:2018 & HACCP Certified Company

SCAN THIS QR FOR *MORE SATTU RECEIPES*

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

१०६ वें जन्म दिवस के पावन अवसर पर आचार्य श्री महाप्रज्ञ का जीवन दर्शन प्रस्तुत

जन्म : राजस्थान प्रान्त के झुंझुनुं जिला, टमकोर (विष्णुगढ़) नामक गाँव, विक्रम संवत् १९७७, आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी (१४ जून १९२०) का दिन, गोधूली वेला, १७.०९ बजे, स्थानिक समय सायं लगभग १६.४० बजे, सोमवार, वृश्चिक राशि, कृत्तिका नक्षत्र में श्रीमती बालूजी ने खुले आकाश में एक पुत्ररत्न को जन्म दिया।

चोर आ गया : जब बालक का जन्म हुआ, उसकी बुआ जड़ावबाई ने छत पर चढ़कर जोर से शोर मचाया- 'चोर आ गया', उनकी आवाज सुनकर चोरड़िया परिवार के पुरूष लाठी लेकर आ गए, जब घर में आए तो उनको सही स्थिति की जानकारी दी गई कि जिस माता के बच्चे जीवित नहीं रहते, उसके लिए ऐसा किया जाता है।

नामकरण : नामकरण संस्कार के अन्तर्गत बालक का नाम 'इन्द्रचन्द' रखा गया, किन्तु वह व्यवहार में नहीं आया, फिर उसे परिवर्तित कर 'नथमल' नाम रखा गया, कारण यह था कि जन्मजात शिशु के दो अग्रज अल्प अवस्था में ही काल-कवलित हो गए थे, इसलिए वर्तमान शिशु को दीर्घजीवी बनाने के लिए उसका नाक बींध कर उसको 'नथ' पहनाई गई, नथ पहनाने के कारण बालक का नाम 'नथमल' रखा गया।

वंश परम्परा: श्री बीजराज चोरड़िया जैन के चार पुत्र थे-
१. गोपीचन्द २. तोलाराम ३.बालचन्द, ४. पन्नालाल,
इन चारों ही भाइयों की वंश परम्परा में जन्मीं सन्तानें तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित हुईं, श्री गोपीचन्द चोरड़िया की दौहित्रियाँ साध्वी मंजुला जैन (गणमुक्त), साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा। तोलारामजी चोरड़िया के सुपुत्र आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी एवम सुपुत्री साध्वी मालूजी। बालचन्दजी चोरड़िया जैन की पुत्री साध्वी मोहनाजी (गणमुक्त) पन्नालाल चोरड़िया जैन की पुत्री साध्वी कमलजी।
श्री तोलाराम चोरड़िया के कुल पाँच सन्तानें हुईं- तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ। तीन पुत्रों में से दो पुत्र तो लघुवय में ही पंचतत्व को प्राप्त हो गए, जिनमें से एक का नाम गोरधन बताया जाता है, एक का नाम अज्ञात है, शायद उसका नामकरण हुआ ही न हो, तीसरा पुत्र 'नथमल' नाम से पहचाना गया, बड़ी पुत्री मालीबाई की शादी चूरू निवासी सोहागमल बैद जैन के पुत्र चम्पालाल बैद जैन के साथ और दूसरी पुत्री प्याराँ (पारी) बाई की शादी बीदासर निवासी केशरीमल बोथरा जैन के पुत्र मेघराज बोथरा जैन के साथ हुई। कालान्तर में पहली पुत्री मालूजी के जीवन में एक नया मोड़ आया, वे अठारह वर्ष की हुईं तभी उनके पति का स्वर्गवास हो गया, तत्पश्चात मालूजी की दीक्षा लेने की भावना प्रबल होने लगी, किन्तु श्वसुर-पक्ष वालों ने किसी आशंका के कारण उनको दीक्षा की अनुमति नहीं दी गई, बाद में वह आशंका निर्मूल हो गई, तब ससुराल की ओर से उन्हें दीक्षा के लिए लिखित आज्ञा मिल गई, फिर दीक्षा-प्राप्ति में कोई अवरोध नहीं रहा, श्री महाप्रज्ञजी ने भी गुरूदेव तुलसीजी से उनकी दीक्षा की प्रार्थना की।
पूज्य गुरुदेव तुलसी का विक्रम संवत् १९९८ का चातुर्मासिक प्रवास 'राजलदेसर' में हो रहा था। कार्तिक कृष्णा सप्तमी के दिन गुरुदेव तुलसी ने मालूजी को दीक्षा की स्वीकृति प्रदान की, दीक्षा में दो दिन शेष थे। कार्तिक कृष्णा नवमी के दिन गुरूदेव ने सत्ताईस मुमुक्षुओं को दीक्षा प्रदान की, उनमें चार भाई और तेईस (मुमुक्षु) बहिनें थीं, इन बहिनों **शेष पृष्ठ ९ पर...**

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

पृष्ठ ८ से... में मालूजी सबसे ज्येष्ठ थीं, साध्वी मालूजी ने चौपन वर्ष चार मास और १५ दिन तक संयम आराधना की, विक्रम संवत २०५२, फाल्गुन शुक्ला नवमी के दिन उन्होंने अनशन के साथ जीवन यात्रा को सम्पन्न किया।

मातृत्व का वैशिष्ट्य : जब बालक लगभग ढाई मास का हुआ तभी उसके सिर से पिता का साया उठ गया, उस समय परिवार में मात्र चार सदस्य थे- माँ बालूजी, बड़ी पुत्री मालीबाई, छोटी पुत्री पारीबाई और पुत्र नथमल। तोलाराम के स्वर्गवास के कुछ समय बाद श्रीमती बालूजी अपनी माँ के पास चली गईं, बालक नथमल जब लगभग ढाई वर्ष का हुआ तब बालूजी अपनी सन्तानों के साथ वापस 'टमकोर' आ गईं, उस समय सब चीजें सस्ती थीं, पास में कुछ संसाधन था और दुकान भी चलती थी। भरण-पोषण में कोई आर्थिक संकट नहीं आया, किन्तु परिवार में पिता का न होना अपने-आप में एक बड़ा संकट था। माँ बालूजी ने इस संकट का अनुभव, अपनी सन्तानों को नहीं होने दिया, जो कि उनके मातृत्व का वैशिष्ट्य था।

माता बालूजी धार्मिक विचारों वाली महिला थीं, प्रतिदिन पश्चिम रात्रि में जल्दी उठकर सामायिक करतीं तथा तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य जीतमलजी द्वारा रचित चौबीसी, आराधना और तेरापंथ के संस्थापक आचार्य भिक्षु के स्तुति-भजनों का संगान करती थी, बालक नथमल सोए-सोए भजनों को सुना करता था।

'सन्त भीखणजी रो समरण कीजै' गीत के बार-बार श्रवण से बालक के मन में आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धा का भाव उत्पन्न हो गया।

माँ बालूजी! बालक नथमल को संस्कारी बनाने में बहुत सजग थीं, जब तक बालक साधुओं/साध्वियों के दर्शन नहीं कर लेता, उसे शान्ति नहीं आती, माता सत्यवादिता पर बल दिया करती और जप करना सिखाती थीं।

आकाश-दर्शन : बालक नथमल में आकाश को पढ़ने का शुरू से ही आकर्षण था, अपने घर में सोया-सोया वह सामने वाली दीवार पर देखता रहता। श्री गोपीचन्द की हवेली में ऊपर 'मालिये' में चला जाता और उसमें खिड़की से घण्टों तक आकाश को देखता रहता, बालक को नई-नई चीजें दिखाई देती।

गाय का दूध : घर के प्रवेश के रास्ते पर गाय बँधती थी, पारीबाई गाय को दुहती थी। बालक नथमल प्याला लेकर पारीबाई के पास बैठ जाता, वह गाय को दुहती जाती और बालक नथमल दूध पीता जाता।

अध्ययन : 'टमकोर' एक छोटा गाँव है, उस समय तो वह सुविधाओं से वंचित था। राजकीय विद्यालय भी वहाँ नहीं था, सम्भवत: यही कारण रहा होगा कि बालक नथमल को राजकीय विद्यालय के अध्ययन से वंचित रहना पड़ा। आर्यसमाजी गुरु विष्णुदत्त शर्मा की पाठशाला में वर्णमाला और पहाड़े पढ़े, कुछ अध्ययन अपने ननिहाल सरदारशहर में किया, बालक अपने ननिहाल में कभी दो महीने तो कभी छह महीने तक भी रहा करता था।

भाग्य खुल गया : अक्सर छोटे बच्चे चंचल होते हैं, बालक नथमल भी उसका अपवाद नहीं था, एक दिन उसने बालसुलभ चपलता के अनुरुप अपनी आँखों पर पट्टी बाँधी और चलने लगा, थोड़ा सा चला और दीवार से टकरा गया, ललाट पर चोट लग गई, खून बहने लगा, बच्चे के लिए माँ का सबसे बड़ा आलम्बन होता है, वह रोता-रोता माँ के पास गया, उसी दिन उसकी बहिन पारीबाई की शादी थी, इसलिए पारिवारिकजन उसमें लगे हुए थे, किसी ने बालक की ओर ध्यान नहीं दिया, पर माँ! ध्यान कैसे नहीं देती? कुछ उलाहना दिया, कुछ पुचकारा, पट्टी बाँध दी, ठीक हो गया। 'आज तुम्हारा भाग्य खुल गया' यह कहकर उसका दर्द दूर कर दिया।

आजीवन अंकित : बालक नथमल अपने साथियों के साथ कई प्रकार के खेल खेला **शेष पृष्ठ १० पर...**

गुरुवर आपका आशीर्वाद बना रहें

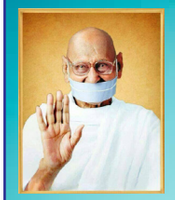

आचार्य भिक्षु वर्तमानाचार्य महाश्रमण आचार्य तुलसी

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म पर्व पर चरणों में कोटि - कोटि वंदन

M. R. Sekhani
Mob.: 9339765482

PRAKASH REFRIGERATION CO.

Specialist in:
- Ice/Ice Candy / Ice Cream Machineries
- Room A.C. & Split A.C. Spares
- Bus/Car Airconditioning Equipments
- Cold Storage / Chilling Plant Equipments

1, Chandney Chowk Street,
Kolkata, 700072, (West Bengal), Bharat, Ph. 033-22150618
E-mail: p.sekhani@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ ९ से... करता था, दियासलाई से टेलीफोन बनाना, तिनके का धनुष बनाना, पेड़ से रस्सी बाँधकर झूला झूलना, एक बार खेलते समय कोई नाम गोदने वाला व्यक्ति आया, बालक ने अपने हाथ पर नाम गुदवाया 'नथमल', जो आजीवन अंकित रहा।

देव-मान्यता : संसार में विभिन्न देव और देवियाँ प्रतिष्ठित हैं, वे भिन्न-भिन्न लोगों की आस्था के केन्द्र भी बने हुए हैं, श्री महाप्रज्ञ के संसारपक्षीय परिवार में बाबा रामदेव की मान्यता थी, इसलिए वे उनके मुख्य केन्द्र 'रूणेचा' भी गए।

क्रोध से क्षमा की ओर : सन्त वह होता है, जो शान्त होता है। काम, क्रोध, अहम्, लोभ आदि निषेधात्मक भावों का दीमक सन्तता की पोथी को चट कर जाता है, ये भाव एक बालक में भी हो सकते हैं। बालक नथमल को बचपन में गुस्सा आता था, उस अवस्था में वह कभी खाना नहीं खाता, पढाई बन्द कर देता, बोलना भी बन्द कर देता, वह खम्भा पकड़कर, दरवाजा पकड़कर खड़ा हो जाता, किसी की बात नहीं सुनता, पारिवारिक लोग मनाकर थक जाते, किन्तु वह तभी मानता, जब कड़कड़ाती भूख लग जाती तब की बात और...

आज की स्थिति में जमीन-आसमान का सा अन्तर दिखाई दे रहा है, ज्यों-ज्यों विवेक जागृत हुआ, ज्ञान का विकास हुआ, त्यों-त्यों गुस्सा नियन्त्रित होता चला गया।

एक बार श्री महाप्रज्ञ के कहा-मुझे दीक्षा के बाद गुस्सा कितनी बार आया, यह अंगुलियों पर गिना जा सकता है, ७५ वर्षों में सम्भवत: ७५ बार भी नहीं आया।

तेलिया की भविष्यवाणी : प्रसंग उस समय का है, जब बालक नथमल लगभग आठ वर्ष का था, वह अपने घर के अहाते में साथियों के साथ खेल रहा था, उसी समय एक 'तेलिया' आया, उसने बालक को देखा और घर के भीतर चला गया, माँ बालूजी कुछ बहनों के साथ बातचीत कर रही थी, तेलिये ने राजस्थानी भाषा में कहा- 'माँ जी! तेल घाल द्यो।' बालूजी ने एक बहन को तेल लाने का निर्देश दिया, वह रसोईघर में गई, इस बीच तेलिया बोला- माँ! तू बड़ी भागवान है। बाखळ (घर के अहाते) में जो थाँरो बालक खेल रह्यो है, बो बड़ो पुनवान है'

बालूजी ने कहा- यदि मैं भागवान हुती तो म्हारो 'घरवालो' क्यूँ जातो? तेलिये ने कहा- थाँरो लड़को, जिको बाखळ में खेलै है, बो एक दिन राजा बणसी' बालूजी का चेहरा खिल उठा। आस-पास बैठी महिलाओं को उसकी बातों में रस आने लगा, उन्होंने उससे पूछा- 'अच्छा! और काँई बतावै है? तेलिये ने एक बहन की ओर इशारा करते हुए कहा- 'आ बहन गर्भवती है, आज स्यूँ आठवें दिन इरै एक लड़को हुसी, वह बहन हरखचन्द चोरड़िया जैन की धर्मपत्नी थी।

तेलिये ने बालूजी से कहा- 'बा तो पराये घर जासी, आपरै सासरै जासी, म्हांरी सेवा कियाँ करसी?' चौथी बार तेलिये ने एक दु:खद बात कह डाली- सातवें दिन थाँरै एक पड़ोसी रे लड़कै री मौत होसी' बहिनों को यह बात बहुत अप्रिय लगी, उन्हें लगा कि यह आदमी ठीक नहीं है, यहाँ से जितनी जल्दी चला जाए, अच्छा है, तेलिये ने स्थिति को समझा, अपने पात्र में तेल का दान लेकर वहाँ से प्रस्थित हो गया।

सातवाँ दिन आया, पड़ोस में रहने वाले अग्रवाल परिवार का आठ वर्षीय लड़का काल-कवलित हो गया, इस दु:खद घटना के घटते ही उस तेलिये को ढूँढा गया, लेकिन उसका कहीं अता-पता नहीं मिला, उसके दूसरे दिन हरखचन्द की धर्मपत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया, तेलिये द्वारा की गई दो भविष्यवाणियाँ सच हो गईं। बालूजी की बड़ी पुत्री मालीबाई का विवाह हो चुका था, बालूजी अपने पुत्र नथमल के साथ संन्यास के पथ पर अग्रसर हो गईं। अकस्मात् एक दुर्घटना घटी, **शेष पृष्ठ ११ पर...**

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

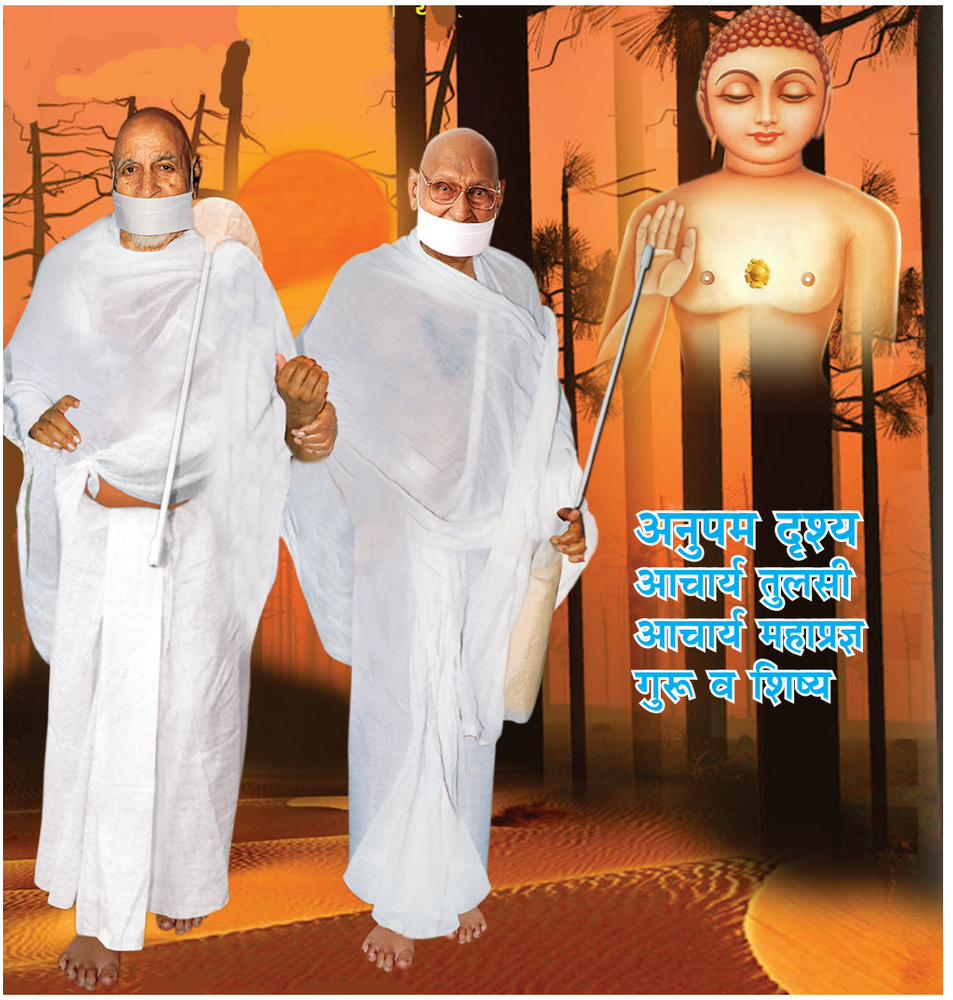

पृष्ठ १० से ... बालूजी के दामाद (मालूजी के पति) का देहान्त हो गया। मालीबाई का मन संसार से उद्विग्न हो उठा, संयम के पथ पर चलने का निश्चय प्रबल बन गया। वे तेरापंथ धर्मसंघ में प्रवर्जित होकर साध्वी मालूजी बन गईं। माँ-बेटी के अलग हुए रास्ते पुन: एक बन गए। पूज्य गुरुदेव ने साध्वी बालूजी की सेवा में साध्वी मालूजी को नियोजित किया। साध्वी मालूजी ने अन्तिम समय तक अपनी संसारपक्षीया माँ साध्वी बालूजी की सेवा की, तेलिये की तीसरी भविष्यवाणी भी सत्य साबित हो गई, अब चौथी भविष्यवाणी कसौटी पर चढ़ गई।

कोलकाता में पहली बार : बालक नथमल लगभग नौ वर्ष का था। मेमन सिंह (वर्तमान में बाँग्लादेश) में उसकी चचेरी बहिन (माँ की पालित पुत्री) नानूबाई का विवाह था, उसमें सम्मिलित होने के लिए वह अपने स्वजन के साथ जा रहा था, बीच में कोलकाता में अपनी बुआ के घर ठहरा। शादी के लिए कुछ चीजें खरीदनी थीं। बालक नथमल के चाचा पन्नालाल और दुकान के मुनीम सुरजोजी ब्राह्मण सामान खरीदने के लिए बाजार जा रहे थे, नथमल भी उनके साथ हो गया, वह पहली बार ही कोलकाता आया था, उसे यहाँ का वातावरण बड़ा विचित्र-सा लग रहा था। नथमल अकेला पीछे रह गया। मार्ग से अपरिचित बालक इधर-उधर झाँकने लगा, उस विकट बेला में उसने अपने हाथ की घड़ी खोली, गले में से स्वर्णसूत्र निकाला और दोनों को जेब में रख लिया, वह पीछे मुड़ा और अज्ञात मार्ग की ओर चल दिया, सौभाग्यवश वह यथास्थान पहुँच गया, उसने आप बीती सारी घटना माँ को सुनाई तो वे अवाक-सी रह गईं, तत्काल उनके मुख से निकला- 'यह सब (पुत्र का यथास्थान पहुँच जाना) भीखणजी स्वामी के प्रताप से हुआ है, नहीं तो, इतने बड़े शहर में न जाने क्या घटित होता?'' ज्ञातव्य है कि पन्नालालजी का नथमल के प्रति बहुत स्नेहभाव था, वे उसका बहुत ध्यान रखते थे।

वैराग्य-भाव : श्री गोपीचन्द चोरड़िया की पुत्री छोटीबाई (साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की संसारपक्षीया माँ) की शादी का प्रसंग था। टमकोर से लाडनूँ आते समय छोटीबाई का भाई नथमल साथ आया। वे लाडनूँ पहुँचे। यह परम्परा रही है कि बहिन को ससुराल पहुँचाने के लिए भाई साथ जाता है। पारिवारिक लोग सेवा केन्द्र में साध्वियों के दर्शनार्थ गए, अन्य जन ऊपर चले गए, नथमल नीचे ही खड़ा रह गया, उस समय बालक नथमल आत्मविभोर हो गया और उसके मानस में वैराग्य भाव का संचार हुआ।

श्री महाप्रज्ञ ने कहा

श्री तोलारामजी एक अच्छे व्यक्ति थे, सुन्दर आकृति वाले, लड़ाई-झगड़े से बचकर रहने वाले और उदार व्यवहार वाले थे, वे क्षत्रिय जैसे लगते थे। लगता है, उनको कुछ पूर्वाभास हो गया था, उन्होंने एक दिन मेरी संसारपक्षीया माँ श्रीमती बालूजी से कहा- 'तुम एक पुत्र को जन्म दोगी, पर मैं नहीं रहूँगा।' बालूजी तत्काल बोल उठी- 'ऐसा बेटा मुझे नहीं चाहिए, जिसके आने पर आप न रहें।' श्री तोलाराम का यह पूर्वाभास कुछ समय बाद ही सत्य साबित हो गया।

श्री बीजराज चोरड़िया कहा करते थे कि हमारे परिवार में दो ऐसे व्यक्तित्व होंगे, जो विशिष्ट कार्य करेंगे, मैं और साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा, हम दोनों ही उस परिवार के सदस्य हैं।

जन्म के बाद दो-तीन वर्ष तक मुझे अन्न दिया ही नहीं गया था, दूध और फल पर ही रखा गया था, ऐसा बालूजी (संसारपक्षीया माँ) कहा करती थीं। साध्वी मालूजी (संसारपक्षीया बहिन) भी कहा करती थीं कि इससे हड्डियाँ मजबूत बनती हैं।

मेरा सह क्रीड़ा बालक मूलचन्द चोरड़िया गणित में अच्छा था, यदि उसे निमित्त मिलता तो वह दुनियाँ का विशिष्ट गणितज्ञ बन जाता।

108 मुनिश्री प्रमाणसागर जी के
अवतरण दिवस पर कोटि-कोटि नमोस्तु!

२७ जून

AJIT VINAY ROHIT ARNAY & RIYAAN JAIN (PANDYA)
1C-23, Kalpataru Gardens, Ashok Nagar,
Kandivali East, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400101
Mob. :- 9830044888

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म पर्व पर
चरणों में कोटि - कोटि वंदन

आचार्य महाप्रज्ञ
आचार्य महाश्रमण
Ramnikchand Kapurchand
Jhaveri Family
113, Chandrlok 'B', 12, Manav Mandir Road,
Mumbai, Maharashtra, Bharat-400006
Ph: 022-23695507 Mob: 09820025507

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
जिनागम
हम सब जैन हैं

राष्ट्रमाता बनें
निवेदकः मैं भारत हूँ फाउंडेशन

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन का रहस्य

अनेकांत का दृष्टिकोण : भाग्य मानूँ या नियति? सबसे पहली बात-मुझे जिन शासन मिला, जिन शासन का अर्थ - अनेकांत का दृष्टिकोण मिला, मैंने अनेकांत को जिया है, यदि अनेकांत का दृष्टिकोण नहीं होता तो शायद कहीं न कहीं दल-दल में फँस जाता।

मुझे प्रसंग याद है कि दिगम्बर समाज के प्रमुख विद्वान कैलाशचंद्र शास्त्री आए, उस समय पूज्य गुरूदेव कानपुर में प्रवास कर रहे थे। मेरा ग्रंथ 'जैन दर्शन, मनन और मीमांसा' प्रकाशित हो चुका था, पंडित कैलाशचंद्र शास्त्री ने कहा-मुनि नथमलजी ने 'श्वेताम्बर-दिगम्बर' परंपरा के बारे में जो लिखना था, वह लिख दिया, वह हमें अखरा नहीं, चुभा नहीं, जिस समन्वय की शैली से लिखा है, वह हमें बहुत अच्छा लगा।

मुझे अनेकांत का दृष्टिकोण मिला, इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ, जिस व्यक्ति को अनेकांत की दृष्टि मिल जाए, अनेकांत की आँख से दुनिया को देखना शुरू करे तो बहुत सारी समस्याओं का समाधान अपने आप हो जाता है।

अनुशासन का जीवन : दूसरी बात-मुझे तेरापंथ में दीक्षित होने का अवसर मिला, मैं मानता हूँ - वर्तमान में तेरापंथ में दीक्षित होना परम सौभाग्य है वह इसलिए कि आचार्य भिक्षु ने जो अनुशासन का सूत्र दिया, जो अनुशासन में रहने की कला और निष्ठा दी, वह देवदुर्लभ है, अन्यत्र देखने को नहीं मिलती।

मैंने अनुशासन में रहना सीखा, जो अनुशासन में रहता है, वह और आगे बढ़ जाता है, आत्मानुशासन की दिशा में गतिशील बन जाता है। तेरापंथ ने विनम्रता और आत्मानुशासन का जो विकास किया, वह साधु-संस्था के लिए ही नहीं, समस्त समाज के लिए जरूरी है।

विनम्रता और आत्मानुशासन : महानता के दो स्रोत होते हैं - स्वेच्छाकृत विनम्रता और आत्मानुशासन, जो व्यक्ति महान होना चाहता है अथवा जो महान होने की योजना बनाता है, उसे इन दो बातों को जीना होगा, जो व्यक्ति इस दिशा में आगे बढ़ता है, विनम्र और आत्मानुशासी होता है, अपने आप महानता उसका वरण करती है।

मुझे तेरापंथ धर्मसंघ में मुनि बनने का गौरव मिला और उसके साथ मैंने विनम्रता का जीवन जीना शुरू किया, आत्मानुशासन का विकास करने का भी प्रयत्न किया, मुझे याद है - इस विनम्रता ने हर जगह मुझे आगे बढ़ाया, जो बड़े साधु थे, उनका सम्मान करना मैंने कभी एक क्षण के लिए भी विस्मृत नहीं किया, सबका सम्मान किया।

आचार्य तुलसी के निकट रहता था, विश्वास था कि जो गुरूदेव से बात करेंगे, उसका काम हो जाएगा, जो भी समस्या आती, मैं उसके समाधान का प्रयत्न करता, मैं छोटा था बड़े-बड़े साधु मुझे कहते, पर मैंने हमेशा उनके प्रति विनम्रता और सम्मान का भाव बनाए रखा, कभी उनको यह अहसास नहीं होने दिया कि कहीं कोई बड़प्पन का लक्षण मुझमें है।

मैंने आत्मानुशासन का विकास किया, शासन करना न पड़े, जो स्वयं अपना नियंत्रण स्वयं अपने हाथ में लें, जिसका अर्थ यह माना जाये कि वह व्यक्ति अपने भाग्य की चाबी अपने हाथ में ले लेता है।

गुरू का अनुग्रहः मैंने आचार्य भिक्षु को पढ़ा, उनकी जो संयम निष्ठा थी, त्याग और व्रत की निष्ठा थी, उसे पढ़ने से जीवन को समझने का बहुत अवसर मिला, पूज्य गुरूदेव का अनुग्रह था, जब भी कोई प्रसंग आया, मुझे कहा - 'तुम यह पढ़ो', शायद आचार्य भिक्षु ने पढ़ने का जितना मुझे अवसर दिया, मैं कह सकता **शेष पृष्ठ १३ पर...**

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर
गुरुवर के चरणों में कोटि-कोटि वंदन

पूनमचंद सुराणा
मो. ९८३१०३७०११
कौशल सुराणा
मो. ८००९५२७२२४
ओसवाल टेन्ट प्रोडक्ट्स
हेड ऑफिस : १२७/२२, टी-ब्लाक, विनोबा नगर,
गोविन्द नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत-२०८०१४
ब्रांच ऑफिस : ७६-ए, बी. एम. मार्केट, परमपुरवा,
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत-२०८०१४
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

राष्ट्रमाता बनें
निवेदक: मैं भारत हूँ फाउंडेशन

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

पृष्ठ १२ से ... हूँ - तेरापंथ के किसी भी पुराने या नए साधु को पढ़ने का उतना अवसर नहीं मिला होगा, उनकी क्षमाशीलता, उनकी विनम्रता, उनकी सत्यनिष्ठा को समझने और वैसा जीने का भी प्रयत्न किया है मैंने....

मुझे आचार्य तुलसी से तो सब कुछ मिला था, उनके पास रहा, जीवन जिया, उन्होंने जो कुछ करना था, किया, इतना किया कि पंडित दलसुख भाई मालवणिया जितनी बार आते, कहते, 'श्री आचार्य तुलसी और युवाचार्य महाप्रज्ञ-गुरू और शिष्य का ऐसा संबंध पच्चीस सौ वर्षों में कहीं रहा है, हमें खोजना पड़ेगा?'

नवीनता के प्रति आकर्षण : अध्ययन का क्षेत्र बढ़ा, सिद्धसेन दिवाकर की जो एक उक्ति थी उसने मुझे बहुत आकृष्ट किया, उनका जो वाक्य पढ़ा, सीखा या अपने हृदय पटल पर लिखा, वह यह है -

'जो अतीत में हो चुका है, वह सब कुछ हो चुका, ऐसा नहीं है' सिद्धसेन ने बहुत बड़ी बात लिख दी - 'मैं केवल अपने अतीत का गीत गाने के लिए नहीं जन्मा हूँ, मैं शायद उस भाषा में न भी बोलूँ, पर मुझे यह प्रेरणा जरूर मिली कि कुछ नया करने का हमेशा अवकाश रहता है, हम सीमा न बाँधें कि सब कुछ हो चुका है, अनंत पर्याय है, आज भी नया करने का अवकाश है। कुछ नया करने की रूचि प्रगाढ़ होती गई, मुझे कुछ नया भी करना चाहिए, कोरे अतीत के गीत गाने से काम नहीं होगा। वर्तमान में भी कुछ करना है - मेरे गीत मत गाओ, कोरे अतीत के गीत मत गाओ, कुछ वर्तमान को भी समझने का प्रयत्न करो।

आचार्य हरिभद्र, जिनभद्र, गणि क्षमाश्रमण, आचार्य हेमचंद्र, आचार्य मलयगिरी, आचार्य कुंदकुंद आदि-आदि ऐसे महान आचार्य हुए हैं, जिन्हें पढ़ने पर कोई न कोई नई बात ध्यान में आती गई, मैं उन सबका संकलन और अपने जीवन में प्रयोग करता रहा।

योग का संस्कार : दूसरी बात यह थी - जब मैं छोटा था तब गाँव में रहा, टमकोर छोटा-सा गाँव है। पाँच-सात हजार की आबादी वाला गाँव, हम कई बच्चे खेल रहे थे, गाँव में ज्यादा कोई काम तो होता नहीं, पढ़ाई करते नहीं थे, विद्यालय भी नहीं था। सारा दिन खेलकूद करते रहना, रोटी खाना और सो जाना, बस यही क्रम था।

मैंने लक्ष्य बनाया था - मुझे अच्छा साधु बनना है और मुझे जिन शासन की, भिक्षु शासन की और मानवता की सेवा में लगना है, काम करना है, जीवन भर यही लक्ष्य रहा, लक्ष्य में कोई अंतर नहीं आया, समस्याएँ आती-रहती हैं, बाधाएँ आती हैं, उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, पर लक्ष्य आपका निश्चित हो तो आप मंजिल तक जरुर पहुँचेगें।

।। ॐ अर्हम् ।।
तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर
गुरुवर के चरणों में कोटि-कोटि वंदन

Narendra Goushal
Managing Director
Member : NSE, BSE & NSDL, CDSL
ARCH CREATING VALUES ARCH Finance Ltd
81, 1st Floor, Darya Ganj, New Delhi, Bharat- 110002
Email :- archfin@archfin.com
Website: www.archfin.com
Contact No: 8595233233 B: 011-43710000

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारतीय संस्कृति के धनी

आचार्य देवेश श्री ऋषभचन्द्र सूरीश्वरजी

भारत अपनी अध्यात्म प्रधान संस्कृति से विश्रुत था, किन्तु आज इसने 'जगद्गुरु'होने की पहचान खो दी, खोयी हुई पहचान को पुन: प्राप्त करने एवं अध्यात्म के तेजस्वी स्वरूप को पाने के लिये अनेक संत-मनीषी अपनी साधना, अपने त्याग, अपने कार्यक्रमों से प्रयासरत हैं, ताकि जनता के मन में अध्यात्म एवं धर्म के प्रति आकर्षण रह सके। अध्यात्म ही एक ऐसा तत्व है, जिसको उज्जीवित और पुनर्प्रतिष्ठित कर 'भारत' अपने खोए गौरव को पुन: उपलब्ध कर सकता है, इस महनीय कार्य में लगे रहे ज्योतिष सम्राट के नाम से चर्चित मुनिप्रवर श्री ऋषभचन्द्र विजयजी, आप महान् तपोधनी, शांतमूर्ति, परोपकारी संत थे, जिन्होंने संसार की असारत का बोध बताया, संयम जीवन का सार समझाया एवं मानवता के उपवन को महकाया।

मुनि श्री ऋषभचन्द्रजी का जन्म ज्येष्ठ सुदी ७, संवत २०१४ दिनांक ४ जून १९५७ को सियाना (राजस्थान) में हुआ, आपके पिता का नाम शा.श्री मगराजजी तथा माता का नाम श्रीमती रत्नावती था। बचपन का नाम मोहनकुमार था। आपकी माताश्री एवं भ्राता भी दीक्षित होकर संयममय जीवन जी रहे हैं एवं माता संयम जीवन में तपस्वीरत्ना श्री पीयूषलताश्री एवं भ्राता आचार्यदेवेश श्री रवीन्द्रसूरीश्वरजी हैं, आपकी दीक्षा द्वितीय ज्येष्ठ सुदी १०, दिनांक २३ जून १९८०, श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ (म.प्र.) में आचार्यदेवेश श्री विद्याचंद्र सूरीश्वरजी 'पथिक' के करकमलों से हुई, आपने अपने गुरु से जैन दर्शन के साथ-साथ विशेषत: अध्ययन व्याकरण, न्याय, आगम, वास्तु, ज्योतिष, मंत्र विज्ञान, आयुर्वेद, शिल्प आदि का गहन अध्ययन किया, आपने ४० से अधिक पुस्तकें लिखी, जिसमें अभिधान राजेन्द्र कोष (हिन्दी संस्करण) प्रथम भाग, अध्यात्म का समाधान (तत्वज्ञान), धर्मपुत्र (दादा गुरुदेव का जीवन वृत्त), पुण्यपुरुष, सफलता के सूत्र (प्रवचन), सुनयना, बोलती शिलाएं, कहानी किस्मत की, देवताओं के देश में, चुभन (उपन्यास), सोचकर जिओ, अध्यात्म नीति वचन (निबंध) आदि मुख्य हैं।

मुनिश्री ऋषभचंद्रविजयजी का जन्म और जीवन दोनों विशिष्ट अर्हताओं से जुड़ा दर्शन है जिसे जब भी पढ़ेंगे, सुनेंगे, कहेंगे, लिखेंगे और समझेंगे तब यह प्रशस्ति नहीं, प्रेरणा और पूजा का मुकाम बनेगा, क्योंकि ऋषभचंद्र विजय किसी व्यक्ति का नाम नहीं, पद नहीं, उपाधि नहीं और अलंकरण भी नहीं, यह तो विनय और विवेक की समन्विति का आदर्श है। श्रद्धा और समर्पण की संस्कृति है। प्रज्ञा और पुरुषार्थ की प्रयोगशाला है। आशीष और अनुग्रह की फलश्रुति है। व्यक्तिगत निर्माण की रचनात्मक शैली है और अनुभूत सत्य की स्वस्थ प्रस्तुति है, यह वह सफर था, जिधर से भी गुजरता है उजाले बांटता हुआ आगे बढ़ता है, कहा जा सकता है कि निर्माण की प्रक्रिया में इकाई का अस्तित्व जन्म से ही इनके भीतर था, शून्य जुड़ते गए और संख्या की समृद्धि अक्षय बनती गई।

ऋषभचंद्र विजयजी का अतीत सृजनशील सफर का साक्षी है, इसके हर पड़ाव पर शिशु-सी सहजता, युवा-सी तेजस्विता, प्रौढ़-सी विवेकशीलता और वृद्ध-सी अनुभवप्रवणता के पदचिन्ह हैं, जो हमारे लिए सही दिशा में मील के पत्थर बनते हैं। आपका वर्तमान तेजस्विता और तपस्विता की ऊंची मीनार है जिसकी बुनियाद में जीए गए अनुभूत सत्यों का इतिहास संकलित है, जो साक्षी था सतत अध्यवसाय और पुरुषार्थ की कर्मचेतना का, परिणाम था तर्क और बुद्धि की समन्वयात्मक ज्ञान चेतना का और उदाहरण है निष्ठा तथा निष्काम भाव चेतना का, आपकी करुणा में सबसे साथ सह-अस्तित्व का भाव था, निष्पक्षता में सबके प्रति गहरा विश्वास था, न्याय प्रवणता में सूक्ष्म अन्वेषणा के साथ व्यक्ति की गलतियों के परिष्कार की मुख्य भूमिका थी। सापेक्ष चिंतन में अहं, आग्रह, विरोध और विवाद का अभाव, विकास की यात्रा में सबके अभ्युदय की अभीप्सा थी, आपकी मूल प्रवृत्ति में रचनात्मकता और जुझारूपन दोनों था, अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जूझते रहे, अपनों से भी, परायों से भी और कई बार खुद से भी। इस जुनून में अपने मान-अपमान की भी प्रवाह नहीं करते, सिद्धांतों को साकार रूप देने की रचनात्मक प्रवृत्ति के कारण मुनियों के लिए ज्यादा करणीय माने जाने कार्यों की अपेक्षा जीवदया, मानव सेवा व तीर्थ विकास में उनकी रूचि ज्यादा परिलक्षित होती है, जीवदया व मानवसेवा के कई प्रकल्प आपके चला रखे थे, मन्दिरों के निर्माण एवं जीर्णोद्धार के द्वारा न केवल जैन संस्कृति बल्कि भारतीय संस्कृति सुदृढ़ किया, आप

गौरक्षा एवं गौसेवा के प्रेरक रहे, गौशालाओं के साथ-साथ गौ-कल्याण के अनेक उपक्रम संचालित करते रहे, संवेदना एवं संतुलित समाज रचना के संकल्प के चलते आपने मोहनखेड़ा तीर्थ पर गरीब एवं आदिवासी बच्चों के लिए विद्यालय भी संचालित किया, **शेष पृष्ठ १५ पर...**

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम
'भारतद्वार' लिखवायें

राष्ट्रमाता बनें
निवेदक: मैं भारत हूँ फाउंडेशन

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

पृष्ठ १४ से ... जहां सैकड़ों विद्यार्थी आप ज्ञानार्जन कर रहे हैं, नेत्र, विकलांगता, नशामुक्ति, कटे हुए (कुरूप) होठों, कुष्ठ, मंदबुद्धि निवारण आदि के विशिष्ट सेवा प्रकल्प आपके नेतृत्व में संचालित होते रहे, अपने गुरु हॉस्पिटल, गौशाला एवं गुरुकुल आदि के सपनों को आकार देने में जुटे रहे, आपने पांच करोड़ की लागत से श्री महावीर पवित्र सरोवर को निर्मित कर जनआवश्यकता की पूर्ति की, अलौकिक, अनुपम एवं विलक्षण जैन संस्कृति पार्क को निर्मित कर आपने अपनी मौलिक सोच का परिचय दिया, जगह-जगह मन्दिरों का निर्माण, तीर्थ यात्राएं निकालना, कार सेवा एवं तीर्थशुद्धि एवं स्वच्छता अभियान तीर्थों की स्थापना आदि अनेक अद्भुत एवं संस्कृति प्रभावना के कार्य आपने करवाए, आपमें निर्माण की वृत्ति भी है व शक्ति भी। राजगढ़ का मानव सेवा हॉस्पिटल, मोहनखेड़ा का नेत्र चिकित्सालय, सहकारी सोसायटियां, अनेक मंदिर व गौशालाएं इसी वृत्ति व शक्ति का परिचायक है, आप कार्य के प्रति अपनी लगन को दूसरे में भी उतार देते और दूसरे ही पल उनकी शक्ति बन जाते थे। मुनि श्री ऋषभचन्द्र विजयजी के बारे में लिखना 'जिनागम' पत्रिका परिवार के लिये सौभाग्य का सूचक हैं, आपके उदार और व्यापक दृष्टिकोण का ही प्रभाव है कि आज किसी भी जाति, वर्ग, धर्म, समुदाय या संप्रदाय से जुड़ा व्यक्ति, वह चाहे प्रबुद्ध हो या अप्रबुद्ध करीब आता, पूरे चाव से पढ़ता, सुनता और आपके कार्यक्रमों का सहभागी बनता, आपका व्यक्तित्व और कर्तृत्व इक्कीसवीं सदी के क्षितिज पर पूरी तरह छाया रहा, आपके प्रकल्पों, विचारों व प्रवचनों में कोरी आदर्शवादिता या सिद्धांतवादिता के दर्शन नहीं होते, प्रयोग सिद्ध वैज्ञानिक स्वरूप उपलब्ध होता था, आपने ज्ञान गर्भित प्रवचनों व साहित्य के माध्यम से आध्यात्मिक एवं नैतिक क्रांति का शंखनाद किया, आप धर्म को रूढ़ि परंपरा के रूप में स्वीकार नहीं करते थे, धार्मिक आराधना-उपासना से व्यक्ति की जीवनशैली और वृत्तियों में बदलाव लाते थे, समग्र जीवनदर्शन का निचोड़ भी यही है, ऐसे महान् संत का एक आचार्य के रूप में पदाभिषेक होना एक शुभ भविष्य की आहट थी।

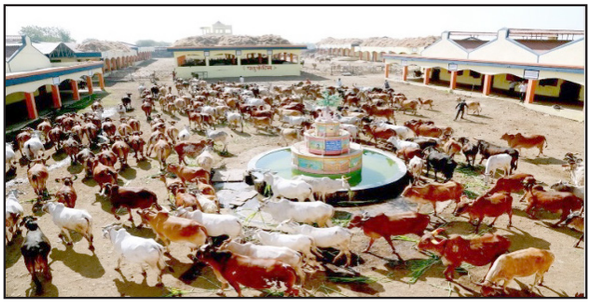

विश्व-क्षितिज पर अशांति की काली छाया है। रक्तपात, मारकाट की त्रासदी है। मानवीय चेतना का दम घुट रहा है, कारण चाहे राजनीतिक हो या सामाजिक, आर्थिक हो या धार्मिक, कश्मीर का आतंकवाद हो या सांप्रदायिक ज्वालामुखी, तलाक का मसला हो या राष्ट्रगीत गाये जाने पर आपत्ति,

भारत को दो नामों से बोला जाना 'इंडिया व भारत' ऐसी ही अन्य दर्दनाक घटनाएं हिंसा एवं संकीर्णता की पराकाष्ठा है। आर्थिक असंतुलन, जातीय संघर्ष, मानसिक तनाव, छुआछूत आदि राष्ट्र की मुख्य समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं, जन-मानस चाहता है, अंधेरों से रोशनी में प्रस्थान, अशांति में शांति की प्रतिष्ठा, किंतु दिशा दर्शन कौन दे? यह अभाव-सा प्रतीत हो रहा था, ऐसी स्थिति में मुनि श्री ऋषभजी का अहिंसक जीवन और विविध मानवतावादी उपक्रम ही वस्तुत: मानव-मानव के दिलो-दिमाग पर पड़े संत्रास के घावों पर मरहम का-सा चमत्कार करने की संभावनाओं को उजागर करते, आप आचार्य बनकर मानव को उन्नत जीवन की ओर अग्रसर करने का भगीरथ प्रयत्न किया।

मुनि श्री ऋषभचन्द्र विजयजी का व्यक्तित्व बुद्धिबल, आत्मबल, भक्तिबल, कीर्तिबल और वाग्बल का विलक्षण समवाय है, दृढ़-इच्छाशक्ति, आग्नेय संकल्प, पुरुषार्थ और पराक्रम के द्वारा उन्होंने उपलब्धियों के अनेक शिखर स्थापित किए, जो उन जैसे गरिमामय व्यक्तित्व ही कर सकते हैं। दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी के नेतृत्व में 'त्रिस्तुतिक श्रीसंघ' एवं 'श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ' ने विकास की अलंघ्य ऊंचाइयों का स्पर्श किया, उसके नाभि केंद्र मुनि श्री ऋषभचन्द्र विजयजी ही रहे हैं, आपने भारत की अध्यात्म विद्या और संस्कार-संपदा को पुनरुज्जीवित कर उसे जन-मानस में प्रतिष्ठित करने का भगीरथ प्रयत्न किया, ऐसे युग **शेष पृष्ठ १६ पर...**

'जैन एकता' से ही जैन समाज का
विकास व सम्मान बढ़ेगा मिल कर कहें
हम-सब जैन हैं

PTM

Jatan Singh Mehta
Mob.: 9422049225

Ratan Singh Mehta
Mob.: 9414008998

Pankaj Mehta
Mob.: 8155016504

PANKAJ TEXTILE MILLS
PANKAJ SYNTHETIC MILLS

Mfg of Export Quality Bottoms & Denium, Shirting, Loan Cloth, Pocketing And all other Fabrics

5/586, 'Pankaj' Bunglow, Near Lions Club, Ichalkaranji, Dist-Kolhapur, Maharashtra, Bharat- 416115
Email pankajsynthetics09©gmail.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १५ से ... प्रणेता, युग निर्माता अध्यात्मनायक के आचार्य पर संपूर्ण जैन समाज गौरवान्वित होता रहा है।

ऋषभचंद्र विजयजी का अतीत सृजनशील सफर का साक्षी था, हर पड़ाव पर शिशु-सी सहजता, युवा-सी तेजस्विता, प्रौढ़-सी विवेकशीलता और वृद्ध-सी अनुभवप्रवणता के पदचिन्ह रहे जो हम सबके लिए सही दिशा में मील के पत्थर बनते रहे, तेजस्विता और तपस्विता की ऊंची मीनार, जिसकी बुनियाद में जीए गए अनुभूत सत्यों का इतिहास संकलित है, जो साक्षी भी है सतत अध्यवसाय और पुरुषार्थ की कर्मचेतना का परिणाम, तर्क और बुद्धि की समन्वयात्मक ज्ञान चेतना का उदाहरण, निष्ठा तथा निष्काम भाव चेतना आपकी करुणा में सह-अस्तित्व का भाव रहा, निष्पक्षता में सबके

प्रति गहरा विश्वास रहा, न्याय प्रवणता में सूक्ष्म अन्वेषणा के साथ व्यक्ति की गलतियों के परिष्कार की मुख्य भूमिका थी, सापेक्ष चिंतन में अहं, आग्रह, विरोध और विवाद का अभाव था, विकास की यात्रा में सबके अभ्युदय की अभीप्सा, मूल प्रवृत्ति में रचनात्मकता और जुझारूपन, अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जूझते रहते अपनों से भी, परायों से भी और कई बार खुद

से भी, इस जुनून में अपने मान-अपमान की भी प्रवाह नहीं करते, सिद्धांतों को साकार रूप देने की रचनात्मक प्रवृत्ति के कारण मुनियों के लिए ज्यादा करणीय माने जानेवाले कार्यों की अपेक्षा, जीवदया, मानव सेवा व तीर्थ विकास में उनकी रूचि ज्यादा परिलक्षित होती थी। जीवदया व मानवसेवा के कई प्रकल्प आपने चला रखे थे। मन्दिरों के निर्माण एवं जीर्णोद्धार के द्वारा आप न केवल जैन संस्कृति बल्कि भारतीय संस्कृति सुदृढ़ करते रहे, गौरक्षा एवं गौसेवा के प्रेरक थे, गौशालाओं के साथ-साथ गौ-कल्याण के अनेक उपक्रम संचालित करते रहे, संवेदना एवं संतुलित समाज रचना के संकल्प के चलते आपके मोहनखेड़ा तीर्थ पर गरीब एवं आदिवासी बच्चों के लिए विद्यालय भी संचालित करवाया, जहां सैकड़ों विद्यार्थी ज्ञानार्जन कर रहे हैं। नेत्र, विकलांगता, नशामुक्ति, कटे हुए (कुरूप) होठों, कुष्ठ, मंदबुद्धि निवारण आदि के विशिष्ट सेवा प्रकल्प आपके नेतृत्व में संचालित होते रहे। अपने गुरु के हॉस्पिटल, गौशाला एवं गुरुकुल आदि के सपनों को आकार देने में जुटे रहे। आपने पांच करोड़ की लागत से श्री महावीर पवित्र सरोवर को निर्मित कर जन आवश्यकता की पूर्ति की। अलौकिक, अनुपम एवं विलक्षण जैन संस्कृति पार्क को निर्मित कर आपने अपनी मौलिक सोच का परिचय दिया, जगह-जगह मन्दिरों का निर्माण, तीर्थ यात्राएं निकालना, कार सेवा एवं तीर्थशुद्धि एवं स्वच्छता अभियान तीर्थों की स्थापना आदि अनेक अद्भुत एवं संस्कृति प्रभावना के कार्य आपने करवाए, आपमें निर्माण

की वृत्ति व निर्माण की शक्ति भी थी।

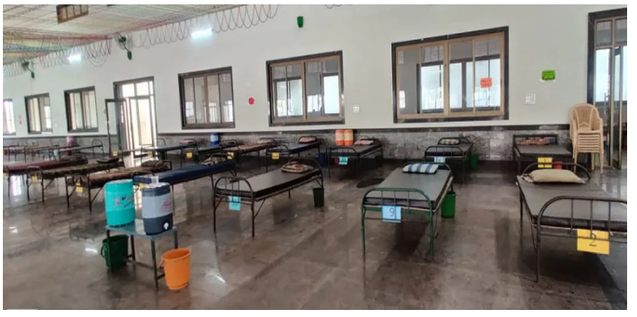

राजगढ़ का मानव सेवा हॉस्पिटल, मोहनखेड़ा का नेत्र चिकित्सालय, सहकारी सोसायटियां, अनेक मंदिर व गौशालाएं इसी वृत्ति व शक्ति का परिचायक है, आपके प्रति अपनी लगन को दूसरे में भी उतार देते थे और ये दूसरे ही पल उनकी शक्ति बन जाते थे। **शेष पृष्ठ १७ पर...**

।। ॐ अर्हम् ।। ।।श्री गुरुवेनमः ।।

जय भिक्षु जय महाश्रमण जय तुलसी

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर गुरुवर के चरणों में कोटि-कोटि वंदन

Dr. V. S. Baid
(PULMONOLOGIST)
Mob. : 9831082034

CA Chanda Baid
Mob. : 9831533450

Dr. Mayank Baid
(Urologist)
Mob. : 9883212610

Dr. Ruchi Jain Baid
(Obs & Gynae)IVF Specialist
Mob. : 7877574734

Dr. Mahak Baid
(Orthopaedics)
Mob. : 9830508578

Dr. V S Baid's Chest & Allergy Clinic

Chamber : 36/2A, Ram Krishna Samadhi Road, Kankurgachi, Kolkata, West Bengal, Bharat-700054

lake District, 74 &74/1 Narkeldanga Main Road, Block-5, Lobby-2, Flat- 9E & 10E, Kolkata, West Bengal, Bharat-700054

पृष्ठ १६ से ... आचार्य ऋषभचन्द्र विजयजी के उदार और व्यापक दृष्टिकोण का ही प्रभाव था, किसी भी जाति, वर्ग, धर्म, समुदाय या संप्रदाय से जुड़ा व्यक्ति, वह चाहे प्रबुद्ध हो या अप्रबुद्ध आपके करीब आता, तो आपको पूरे चाव से पढ़ता और सुनता, आपके कार्यक्रमों में सहभागी बनता, आपके प्रकल्पों, विचारों व प्रवचनों में कोरी आदर्शवादिता या सिद्धांतवादिता के दर्शन ही नहीं होते, प्रयोग सिद्ध वैज्ञानिक स्वरूप उपलब्ध होता था, अपने ज्ञान गर्भित प्रवचनों व साहित्य के माध्यम से आपने आध्यात्मिक एवं नैतिक क्रांति का शंखनाद किया, आप धर्म को रूढ़ि या परंपरा के रूप में स्वीकार नहीं करते, धार्मिक आराधना-उपासना से व्यक्ति की जीवनशैली और वृत्तियों में बदलाव लाते, आपके समग्र जीवनदर्शन का निचोड़ यही रहा, ऐसे महान संत का असमय चला जाना 'जिनागम' पत्रिका परिवार को गहरी रिक्तता का आभास कराता रहा है।

विश्व-क्षितिज पर हिंसा, युद्ध, विकृत राजनीति, कोरोना महामारी की काली छाया से मानवीय चेतना का दम घुट रहा है, कारण चाहे राजनीतिक हो या सामाजिक, आर्थिक हो या धार्मिक, आतंकवाद हो या सांप्रदायिक ज्वालामुखी- ये और ऐसी ही अन्य दर्दनाक घटनाएं हिंसा एवं संकीर्णता की पराकाष्ठा है, आर्थिक असंतुलन, जातीय संघर्ष, मानसिक तनाव, छुआछूत आदि राष्ट्र की मुख्य समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं, जन-मानस चाहता है, अंधेरों से रोशनी में प्रस्थान।

अशांति में शांति की प्रतिष्ठा किंतु दिशा दर्शन कौन दे? यह अभाव-सा प्रतीत हो रहा था। ऐसी स्थिति में आचार्य श्री ऋषभ का अहिंसक जीवन और विविध मानवतावादी उपक्रम ही वस्तुतः मानव-मानव के दिलो-दिमाग पर पड़े संत्रास के घावों पर मरहम का-सा चमत्कार करने की संभावनाओं को उजागर कर रहे थे। आज मनीषी एवं समाज-सुधाकर आचार्य ऋषभचन्द्र विजयजी के बारे में सभी कह रहे हैं कि ऋषभचन्द्र विजयजी अब नहीं रहे, मगर धर्म कहता है कि आत्मा कभी नहीं मरती, इसलिये इस शाश्वत सत्य का विश्वास लिये हम सदियों जी लेंगे कि ऋषभचन्द्र विजयजी अभी भी हमारे पास हैं- हमारे साथ हैं, हमारी हर सांस में हैं, दिल की हर धड़कन में हैं।

आचार्य श्री ऋषभचन्द्र विजयजी का व्यक्तित्व बुद्धिबल, आत्मबल, भक्तिबल, कीर्तिबल और वाग्बल का विलक्षण समवाय था। दृढ़-इच्छाशक्ति, आम्नेय संकल्प, पुरुषार्थ और पराक्रम के द्वारा आपने उपलब्धियों के अनेक शिखर स्थापित किए, जो आप जैसे गरिमामय व्यक्तित्व ही कर सकते हैं। दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी के नेतृत्व में त्रिस्तुतिक श्रीसंघ एवं श्री मोहन खेड़ा महातीर्थ ने विकास की अलंघ्य ऊंचाइयों का स्पर्श उसके नाभि केंद्र मुनि श्री ऋषभचन्द्र विजयजी ही थे। भारत की अध्यात्म विद्या और संस्कार-संपदा को पुनरुज्जीवित कर उसे जन-मानस में प्रतिष्ठित करने का भगीरथ प्रयत्न करते हुए चिरनिद्रा में लीन हो गये, ऐसे युग प्रणेता, युग निर्माता, अध्यात्मनायक के महाप्रयाण पर 'जिनागम' पत्रिका परिवार हार्दिक श्रद्धांजलि व्यक्त करता है।

-शा. बाबुलाल जैन, अहमदाबाद

Partner's

Karni Soft Solution Pvt. Ltd.
Aligning IT to BUSINESS

IBM infor

Services Offered

- ERP
- SCM
- PLM
- BI
- IBP Solution
- Digitalization
- Customer & Supplier Portal

Contect Us:
Delhi Office: F-6/10, Krishna Nagar, 3rd Floor New Delhi-110051 (India).
Kolkata Office: 1, Chandney Chowk Street, 1st Floor, B-Block, Room No.7, Kolkata-700072
Ph.: +91 99710 96596
Email: Umedsethia@karnisoftsol.com
Website: www.karnisoftsol.com
Social Media: Facebook: Karni-Soft-Solutions-Pvt-Ltd
Twitter: https://twitter.com/karnisoftsol

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

सारा जमाना पदम जैन का दीवाना

हजारों परिवारों को रिश्तों में जोड़ने वाले पदमचंद जैन का हर कोई दीवाना

वैवाहिक दुनिया के बेताज बादशाह के रूप में सुप्रतिष्ठित पदमचंद जैन की आज दुनिया दीवानी है। दुनिया जिन उद्योगपतियों, फिल्मी सितारों की दीवानी है, वे सारे पदमचंद जैन के दीवाने है। और हो भी क्यों नहीं? आखिर देशभर में अब तक नामी-गिरामी परिवारों को आपस में वैवाहिक रिश्तों में जोड़ने का कीर्तिमान जो स्थापित किया है। जयपुर में एक शादी के आयोजन में जीतो के श्रेष्ठीवर्य से मुलाकात हुई। इनमें तारक मेहता का उल्टा चश्मा के फेम शैलेष लोढा, शेयर मार्केट के दिग्गज मोतीलाल ओसवाल, प्रमुख बिल्डर सुभाष रूणवाल, सेलो ग्रुप के प्रदीप राठौड, इन्स्पीरा के प्रकाश जैन, डॉ. सुरेन्द्र जैन युएसए, प्रकाश कानुगो, तेजराज गुलेच्छा, किशोर खाबिया, राकेश मेहता, शांतिलाल कवाड़, संदिप बाफना सहित अनेक दिग्गजों से मुलाकात हुई। पदमचंद जैन ने अपनी चिर परिचित शैली में सभी का आत्मीय स्वागत किया। रूणवाल परिवार में वैवाहिक आयोजन के अवसर पर परिवार को बधाई दी। पूरे भारत में ओसवाल जैन बच्चों के वैवाहिक बायोडेटा के लिए पदमचंद जैन एक जाना-माना नाम है। राजनीति, प्रशासनिक, समाजसेवी, ब्यूरोक्रेटस उद्योगपति, सहित हर क्लास परिवार के बच्चों के बायोडेटा उपलब्ध है। सच में इतनी दीवानगी देखी नहीं कहीं। हर जुबां पर पदमचंद जैन का नाम।

■ आपके सपनों को पूरा करने वाली टीम ■

आईजेवीओ यानी पदम परिवार की यह टीम आपके बच्चों के लिए तलाशती हैं एक-से-बढ़कर एक सुंदर रिश्तों वाला बायोडाटा

॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

रिश्तों का मंडप आई जे वी ओ

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

9314510196 / 9602623456

प्रोफेशनल, सीए, पायलट इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएस, फिल्म, राजनैतिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखे वैवाहिक रिश्तों का खजाना

1 जून से 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

IJ VO

जैन - वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव

एक छत के नीचे उपलब्ध सेवाएं

वैवाहिक-रोजगार, छात्रवृत्ति, विधवा पेंशन, मेडिकल हेल्प, प्रशासनिक एवं कानूनी सलाह, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सदैव अग्रणी सहयोगी

इंटरनेशनल जैन एवं वैश्य ऑर्गनाइजेशन

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04

फोन : 0141-2602626

अपनों से हो अपनों का रिश्ता

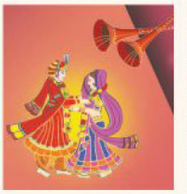

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरंतर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर फीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते हैं। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हो अर्थात प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सूक्ष्मता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते हैं। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आई पीएस हो या राजनीति, समाजसेवा के क्षेत्र से हो, देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है। संकोच नहीं, सम्पर्क करें : पदमचंद जैन -

सेवा के सरोकार
छात्रवृत्ति
मेडिकल शिक्षा
रोजगार
विधवा पेंशन

उक्त आवेदकों की जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

अशोक सिरोया (अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष) | चंदराज सिंघवी (राष्ट्रीय अध्यक्ष) | डॉ. प्रकाश गोलेछा (योजना मंत्री) | नरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष, यू.सि) | बसंत जैन (राष्ट्रीय संगठन मंत्री) | संजय जैन (कोर्डिनेटर) | सुरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय प्रचार मंत्री)

सेवा के पथ पर अग्रसर टीम आईजेवीओ

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, वैभव लॉन के पास, हनुमान मंदिर के सामने, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04

फोन : 0141-2602626 / 4010196 email: neerapadamjain@gmail.com

जन्म	- २७ जून १९६७
पूर्व नाम	- नवीन कुमार जैन
पिता का नाम	- श्री सुरेन्द्र कुमार जैन
माता का नाम	- श्रीमती सोहनी देवी जैन
जन्म स्थान	- हजारीबाग, झारखण्ड, भारत
वैराग्य	- ४ मार्च १९८४, राजनांदगांव, छतीसगढ़, भारत
क्षुल्लक दीक्षा	- ८ नवम्बर १९८५, सिद्ध क्षेत्र आहार जी, जिला- टीकमगढ़, मध्य प्रदेश,भारत
ऐलक दीक्षा	- १० जुलाई १९८७, अतिशय क्षेत्र, थुवौनजी, मध्य प्रदेश, भारत
मुनि दीक्षा	- ३१ मार्च १९८८ जन्म कल्याणक सिद्ध क्षेत्र सोनागिरी जी, मध्यप्रदेश, भारत
दीक्षा गुरू	- संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी

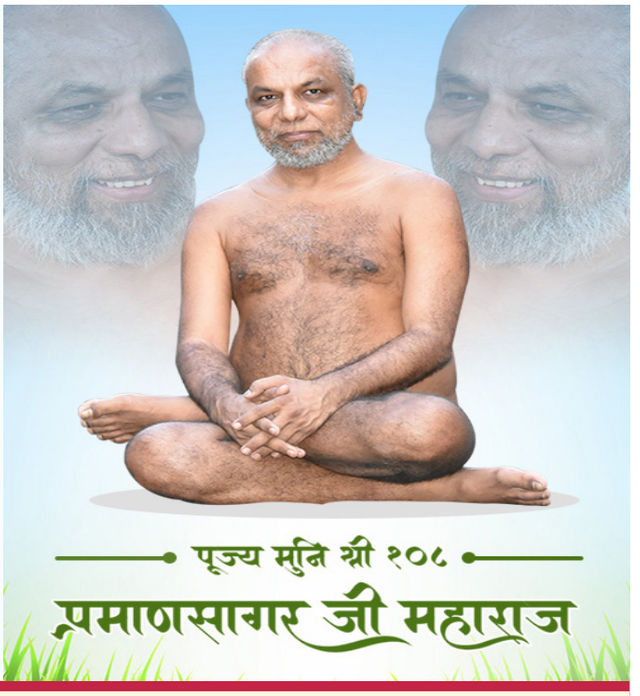

मुनि प्रमाणसागर जी - जीवन परिचय

'यथा नाम तथा गुणः' की उक्ति का जीवन्त रूप दिखाने वाले, बहुमुखी प्रतिभा के धनी मुनिश्री १०८ प्रमाणसागर जी महाराज युगसाधक सन्तशिरोमणि दिगम्बर जैनाचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य हैं, उनका गहन-गम्भीर ज्ञान, निर्दोष-निस्पृह चर्या और सहज-सरल वृत्ति सहज ही सभी को अपनी ओर खींच लेते हैं, धर्म और दर्शन जैसे गूढ़ विषयों की सरल और सरस प्रस्तुति आपका अनुपम वैशिष्टय है, धर्म को पारम्परिक जटिलताओं से मुक्त करते हुए जीवन-व्यवहारोपयोगी रूप में प्रस्तुत किया है आपने, यही कारण है कि एक बार आपके सम्पर्क में आने वाला व्यक्ति, आपसे अभिभूत होकर आपका ही हो जाता है। मुनिश्री की वाणी में ओज, लालित्य और सहज आकर्षण है, अपनी बात को बड़ी सहजता और सरलता से श्रोताओं के हृदय में उतार देने में सिद्धहस्त हैं, यही कारण है कि आपके प्रवचनों में हजारों-हजार श्रोताओं के मध्य भी सूचीपात नीरवता रहती है।

मुनिश्री द्वारा प्रवर्तित 'शंका-समाधान' कार्यक्रम किसी भी जैन सन्त द्वारा टी. व्ही. चैनल पर प्रसारित होने वाला ऐसा प्रथम कार्यक्रम है, जिसके माध्यम से सर्वसाधारण जन सीधे मुनिश्री से जुड़कर अपने धर्म और जीवन व्यवहार से जुड़ी जटिलतम शंकाओं का त्वरित और सटीक समाधान पाकर अभिभूत हो जाते हैं। मुनिश्री अपनी अनुभवप्रसूत-वाणी से मानव जीवन की सभी जटिलतम गुत्थियों को पल भर में ही खोल देते हैं, यही कारण है कि अपने आरम्भकाल से लेकर आज तक इस कार्यक्रम की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है, इसके लाखों दर्शक प्रतिदिन अपने परिवार सहित समय से पूर्व ही टी.व्ही. चैनल देखने बैठ जाते हैं। 'शंका-समाधान' का यह कार्यक्रम विभिन्न संचार माध्यमों के द्वारा प्रतिदिन देखा/सुना जा सकता है। अब तक हजारों लोगों ने इस कार्यक्रम से जुड़कर अपने जीवन की दिशा और दशा में सकारात्मक परिवर्तन घटित करते हुए जीवन को आनन्ददायक और सोद्देश्य बनाया है।

माननीय राजस्थान उच्चन्यायालय द्वारा जैन साधना के प्रधान अंग 'सल्लेखना/संथारा' को आत्महत्या निरूपित करते हुए दिए गए स्थगन-आदेश के बाद मुनिश्री ने 'धर्म बचाओ आन्दोलन' का सूत्रपात कर जैन संस्कृति पर बहुत बड़ा उपकार किया है। मुनिश्री के आह्वान पर २४अगस्त २०१५ को सम्पूर्ण भारतवर्ष के साथ-साथ विदेशों में भी एक समय में एक परिधान में एक करोड़ से अधिक लोगों ने मौनप्रदर्शन किया, मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि सल्लेखना आत्महत्या नहीं है, यह तो मृत्यु के अवश्यंभावी हो जाने की स्थिति में जैन साधना पद्धति के अन्तर्गत साधक द्वारा अपनी साधना के बल पर मृत्यु के भय और कष्ट से ऊपर उठते हुए, साक्षीभाव से उसके अभिनन्दन की अनूठी परम्परा एवं दुर्लभ कला है। 'धर्म बचाओ आन्दोलन' के इस ऐतिहासिक प्रदर्शन के पश्चात् माननीय उच्चतम न्यायालय ने सल्लेखना पर दिए गए स्थगन-आदेश पर अन्तरिम रोक लगा दी है।

प्रारम्भिक जीवनः- तत्कालीन बिहार एवं वर्तमान झारखण्ड राज्य के हजारीबाग नगर में धर्म व संस्कारपरायण श्रावकश्रेष्ठी श्रीमान् सुरेन्द्र कुमार-श्रीमती सोहनी देवी सेठी के घर २७ जून १९६७ को बालक नवीन का जन्म हुआ। नवीन अपने माता-पिता की दूसरी संतान थे, नवीन के अग्रज अनिल कुमार जैन सेठी, अनुज अरविन्द जैन सेठी एवं अनुजा श्रीमती नीतू जैन गृहस्थ जीवन में हैं। लौकिक अध्ययन के प्रति लगनशील एवं अन्य सहपाठियों की अपेक्षा में अधिक अध्यवसायी नवीन की पूरी शिक्षा हजारीबाग में ही हुई।

संयम यात्रा/ वैराग्य एवं दीक्षाः- जनवरी १९८३ **शेष पृष्ठ २१ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जब इंसान अपने अहंकार और इच्छाओं का शिकार होता है, तो वह स्वयं की मालिकियत से दूर होकर नशे का बंदी बन जाता है फिर वह न ठीक से जी पाता है, न मर पाता है..! अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

बांसवाड़ा, राजस्थानः अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज ससंघ परतापुर बांसवाड़ा राजस्थान में उनके सानिध्य में वहां विभिन्न धार्मिक कार्यकम हुए, उसी श्रृंखला में उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि मानव जीवन में अहंकार और इच्छा ऐसे मादक तत्व हैं, जो व्यक्ति को किसी भी प्रकार के नशे की लत की ओर धकेल सकते हैं। दुनिया में नशा करने वाले कितने लोग हैं, यह जानना मानो रेत से तेल निकालने जैसा है।

नशा भी दो प्रकार का होता है, एक अच्छा नशा और एक बुरा नशा, फिर प्रश्न उठता है, सही और गलत क्या है?

जो नशा पाप से बचाए, पुण्य की राह दिखाए, स्वयं से मिलाए और परमात्मा बनाए, वह नशा श्रेष्ठ और कल्याणकारी है, ऐसा नशा हर व्यक्ति को होना चाहिए।

जो नशा पाप की राह पर ले जाए, स्वयं से दूर करे और इंसान को इंसानियत से गिराकर शैतान बना दे, वह नशा केवल बुरा ही नहीं, बल्कि जीवन के लिए अत्यंत घातक है।

आज २०३ लोग एक अदृश्य नशे में डूबे हुए हैं, एंटी-डिप्रेसेंट और नींद की दवाओं का नशा, जब जीवन में दबाव बढ़ता है, तनाव में बदलता है, तनाव से उदासी जन्म लेती है, उदासी से अकेलापन, और अंततः डिप्रेशन, फिर इस डिप्रेशन के दो बड़े दुष्परिणाम सामने आते हैं, 'भय और नशा' बीमारी से बचने के लिए ली गई दवा ही धीरे-धीरे बीमारी का कारण बन जाती है, आज पूरी दुनिया कहीं न कहीं इसी संघर्ष से गुजर रही है।

मेरा आध्यात्मिक चिंतन कहता है, यदि आप डिप्रेशन की दवा ले रहे हैं या नींद की गोलियों पर निर्भर हैं, तो सावधान हो जाइए और २४ घंटे में केवल १० मिनट आत्मचिंतन अवश्य कीजिए, अपने आप से पूछिए, मैं यह सब किसके लिए कर रहा हूँ? जो मैं कर रहा हूँ, क्या वह वास्तव में मेरा स्वभाव है?

जीवन का सारा खेल केवल एक श्वास का है क्यों न हम प्रतिदिन १० मिनट अपनी आती-जाती श्वास को देखें और समझें, श्वास का आना जीवन है, और श्वास का रुक जाना मृत्यु, यह चिंतन ही हमें शुभ परिणामों की ओर ले जाएगा और फिर जो होगा, वह शुभ ही होगा...!!!

-नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल औरंगाबाद

।। ॐ अर्हम् ।। ।।श्री गुरूवेनमः ।।

जय भिक्षु जय महाश्रमण जय तुलसी

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के
जन्म दिवस पर गुरुवर के चरणों में
कोटि - कोटि वंदन

DILIP KUMAR BAID
Mob: 9830091444

Baid Gem Pvt. Ltd.

HA 286, Sector III, Salt Lake City,
Kolkata, West Bangal, Bharat- 700097

सिंघवी सांताक्रूज़ ज्वेलर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष

मुंबईः सांताक्रुज, कालीना, वाकोला ज्वेलर्स वेलफेयर एसोसिएशन की बैठक में प्रकाश सिंघवी को सर्वसम्मति से अध्यक्ष मनोनीत किया गया। कार्यकारिणी में कार्याध्यक्ष महेश कोठारी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सतीश, उपाध्यक्ष बसंतीलाल दुग्गड़ व अश्विन परमार, मंत्री कन्हैयालाल सांखला, सहमंत्री नरेंद्र सिंघवी, कोषाध्यक्ष ओम प्रकाश चोरडिया को नियुक्त किया गया। कार्यकारणी सदस्य अखिलेश सोनी, हेमंत पोखरना, राकेश सिंयाल, मनीष सुराणा एवं भावेश लोढ़ा को बनाया गया। परामर्शक में ज्ञानेश्वर, कालुराम चोरडिया, जीवराज कोठारी एवं प्रमोद बम्ब हैं।

पृष्ठ १९ से... में सन्तशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का ससंघ पदार्पण हजारीबाग में होने पर नवीन कुमार ने उनके प्रथम दर्शन किए, आचार्य श्री के रूप में नवीन को साक्षात् भगवद्दर्शन की अनुभूति हुई, बार-बार आचार्य श्री के सम्पर्क में आने पर नवीन के मन में आत्मकल्याण की भावना बलवती होती चली गई, जिसका परिणाम हुआ ४मार्च १९८४ को १७वर्षीय नवीन का २वर्ष के ब्रह्मचर्य व्रत के साथ आचार्यश्री के संघ में प्रवेश, जहाँ पर साधना के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा साक्षात् गुरुमुख से प्राप्त की। आचार्यश्री ने ब्र. नवीन भैया की साधना तत्परता और योग्यता देखकर ८नवम्बर १९८५ को श्री सिद्धक्षेत्र अहारजी में क्षुल्लक दीक्षा देकर 'प्रमाणसागर' नाम दिया। ११जुलाई १९८७ को अतिशयक्षेत्र थूबौन जी में ऐलक दीक्षा के पश्चात् ३१मार्च १९८८ (तदनुसार महावीर जन्मकल्याणक) को सिद्धभूमि सोनागिरि में दिगम्बरत्व का साधक घोषित करते हुए मुनिदीक्षा प्रदान की।

आचार्य श्री विद्यासागर जी के साथ विचार-विमर्श करते हुए
संकलित चित्र

साधना प्रवासः- दिगम्बर जैन साधुओं की आचारसंहिता के अनुसार मुनिश्री किसी एक स्थान पर स्थायी रूप से नहीं रहते हैं। मुनिश्री वर्षाकाल में जीवों की विराधना से बचने के लिए वर्षायोग-चातुर्मास के रूप में चार माह तक एक ही स्थान पर रुकने के अतिरिक्त अपनी साधना की भाँति निरन्तर गतिशील रहते हैं। ज्ञातव्य है कि जैन मुनि दीक्षा के उपरान्त आजीवन पैदल विहार ही करते हैं, वाहन का प्रयोग नहीं करते। मुनिदीक्षा के उपरान्त कुछ वर्षों तक आचार्यसंघ में ही रहकर साधनारत रहने के पश्चात् आचार्यश्री की आज्ञा से विगत ३०वर्षों से संघ के अन्य साधुओं के साथ विहार करते हुए निरन्तर अपने ज्ञान, ध्यान और तप के प्रति पूर्ण सजग और समर्पित हैं। मुनिश्री के अब तक हुए चातुर्मास की सूची इस प्रकार है:

१९८४ मढ़िया जी, जबलपुर (पूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी के साथ); १९८५ आहार जी टीकमगढ़ (पूज्य आचार्यश्री के साथ); १९८६ पपोराजी, टीकमगढ़ (पूज्य आचार्यश्री के साथ); १९८७ थूबौन जी (पूज्य आचार्यश्री के साथ); १९८८ मढ़िया जी, जबलपुर (पूज्य आचार्यश्री के साथ); १९८९ पिण्डरई (मंडला); १९९० शाहपुरा भिटोनी, जबलपुर; १९९१ सतना; १९९२ विदिशा; १९९३ अतिशय क्षेत्र रामटेक; १९९४ कटनी; १९९५ भोपाल; १९९६ गोटेगाँव; १९९७ सागर; १९९८ ललितपुर; १९९९ अतिशय क्षेत्र भोजपुर; २००० विदिशा; २००१ टीकमगढ़; २००२ फिरोजाबाद; २००३ अतिशय क्षेत्र बहोरीबंद; २००४ सतना; २००५ हजारीबाग; २००६ श्री सम्मेद शिखर जी; २००७ श्री सम्मेद शिखर जी; २००८ गया; २००९ श्री सम्मेद शिखर जी; २०१० रांची; २०११ पावापुरी; २०१२ कोडरमा; २०१३ कोलकाता; २०१४ श्री सम्मेद शिखर जी; २०१५ जयपुर; २०१६ अजमेर; २०१७ उदयपुर; २०१८ रतलाम; २०१९ श्री सिद्धक्षेत्र बावनगजाजी ; २०२० कटनी; २०२१ सम्मेद शिखरजी; २०२२ श्री सम्मेद शिखर; २०२३ गुनायतन; २०२४ **शेष पृष्ठ २२ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पुष्पगिरी तीर्थ में वर्षायोग २०२६ हेतु ९ जुलाई को होगा अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागरजी का भव्य मंगल प्रवेश

जैन समाज के लिए अत्यंत हर्ष एवं आध्यात्मिक गौरव का विषय है कि अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागरजी गुरुदेव के पावन स्वप्न में प्रकट हुई देवगढ़ धरा के प्राचीन जिनालय की लगभग २००० वर्ष से अधिक प्राचीन अतिशयकारी श्री अरहनाथ भगवान की दिव्य प्रतिमा का विश्व वंदनीय पुष्पगिरी तीर्थ की पुण्य एवं तपोमयी भूमि पर शुभ आगमन हुआ, यह अवसर सम्पूर्ण जैन समाज एवं सकल धर्म समाज के लिए एक अद्भुत, अलौकिक एवं युगों में घटित होने वाला आध्यात्मिक चमत्कार माना जा रहा है।

यह दिव्य प्रतिमा केवल एक शिल्प नहीं, बल्कि साधना, श्रद्धा, तप एवं गुरुकृपा का साक्षात् प्रकाश-पुंज है, जो अनंत आत्माओं के कल्याण का माध्यम बनेगी। २२ मई २०२६ को प्रातः ६:१७ बजे गुरु अनुमति से अंतर्मन परिवार के डॉ.आकाश जैन सोनकच्छ, श्री विकल्प (विक्की भैय्या) जैन सोनकच्छ पुष्पगिरी ट्रस्ट अध्यक्ष प्रकाश अजमेरा, सचिव सुभाष जैन, ट्रस्टी प्रमोद जैन, महावीर गंगवाल, गजेन्द्र पंडित द्वारा प्रतिमा का विधिवत विराजमान कराया गया, इसी क्रम में जिन-शासन प्रभावक, श्रमण संस्कृति के दिव्य सूर्य एवं धर्मगुरु आचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी गुरुदेव के पावन आशीर्वाद एवं मंगल आदेश से वर्ष २०२६ के वर्षायोग हेतु अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागरजी गुरुदेव स-संघ को पुष्पगिरी तीर्थ में विराजमान करने के लिए पुष्पगिरी तीर्थ ट्रस्ट मंडल एवं अन्तर्मना परिवार द्वारा राजस्थान के प्रतापूर गढ़ी में पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में श्रीफल अर्पित कर मंगल निवेदन किया गया।

इस अवसर पर आचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी गुरुदेव ने अपने प्रिय शिष्य अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागरजी महाराज को विशेष आशीर्वाद एवं अनुपम कृपापत्र प्रदान किया, साथ ही अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागरजी गुरुदेव के मुखारविंद से दिव्य घोषणा हुई कि ९ जुलाई २०२६ को शुभ मंगल मुहूर्त में उनका स-संघ पुष्पगिरी तीर्थ की दिव्य एवं अलौकिक भूमि पर भव्य, ऐतिहासिक एवं अविस्मरणीय मंगल प्रवेश करेगा।

यह मंगल प्रवेश केवल एक आगमन नहीं, बल्कि धर्म-प्रभावना, आत्म-जागरण, साधना, संस्कार और विश्व मानवता के कल्याण का दिव्य महापर्व होगा, इसकी पुण्यधारा से असंख्य आत्माएँ धर्ममय जीवन की ओर प्रेरित होंगी तथा सम्पूर्ण वातावरण गुरुभक्ति एवं आध्यात्मिक चेतना से आलोकित होगा।

मंगल निवेदन के अवसर पर अन्तर्मना परिवार की ओर से डॉ. आकाश जैन सोनकच्छ, पुष्पगिरी ट्रस्ट के परम संरक्षक अशोक दोषी (मुंबई), उपाध्यक्ष अशोक अजमेरा (फरीदाबाद), सचिव सुभाष जैन (भिण्ड), सह सचिव प्रमोद जैन (ग्वालियर), फाउंडर ट्रस्टी डॉ. राजेन्द्र गदिया (राजिम), ट्रस्टी महावीर गंगवाल (छत्रपति संभाजीनगर), पुष्पगिरी ट्रस्ट अध्यक्ष प्रकाश अजमेरा तथा श्री पुष्पदंतसागर श्रमण संस्कृति न्यास के समस्त श्रद्धालु सदस्य उपस्थित रहे, संपूर्ण देश विदेश के परम गुरु भक्तों से इस ऐतिहासिक एवं युग-प्रेरक अवसर पर परिवार सहित आने हेतु निवेदन किया गया एवं इस मंगल क्षण के साक्षी बनने तथा गुरुकृपा आशीर्वाद से अपने जीवन को धर्म,साधना, संयम एवं आत्मकल्याण करने का आह्वान किया गया।

-नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल, औरंगाबाद

पृष्ठ २१ से... इंदौर; २०२५ भोपाल हुआ।

सामाजिक उत्थान कार्य:- मध्यप्रदेश की राजधानी 'भोपाल' में संचालित 'आचार्यश्री विद्यासागर प्रबन्धविज्ञान संस्थान' उच्चशिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है तो मधुवन शिखर जी में स्थापित एवं कार्यरत 'श्रीसेवायतन' मानव विकास, ग्रामीण विकास एवं शाश्वत सिद्धक्षेत्र की पावनता की संरक्षा और सुरक्षा के लिए सतत प्रयत्नशील है। 'दयोदय महासंघ' के अन्तर्गत संचालित शताधिक गौशालाएँ गौ-संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं।

युवा पीढ़ी को धर्म और धर्मनिष्ठ गतिविधियों से जोड़ने के लिए मुनिश्री की प्रेरणा से सन् २००५ में 'राष्ट्रीय दिगम्बर जैन युवा महासंघ' की स्थापना की गई, वर्तमान में इसकी शताधिक शाखाएँ युवा पीढ़ी को संस्कार और संस्कृति से जोड़ते हुए उनके बहुमुखी विकास में सहकारी बनी हुई हैं। मुनिश्री के सान्निध्य में युवा पीढ़ी को संस्कारित करने के लिए विविध कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं, जिनमें से प्रमुख है- 'ACT' अर्थात् Accept, Change And Transform. यह कार्यक्रम व्यक्तित्व-विकास की दिशा में युवा पीढ़ी की सर्वोच्च प्राथमिकता और आकर्षण का केन्द्र बन गया है। जैन समाज के समग्र विकास के उद्देश्य से 'जैन जनगणना' एवं 'जैन जनगणना-जागरूकता अभियान' का कार्य शुरु किया गया है। मुनिश्री के सान्निध्य में विविध धार्मिक आयोजन होते रहते हैं। मुनिश्री ने अनेक जिनमन्दिरों/जिनप्रतिमाओं के पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में अपना मंगल सान्निध्य प्रदान किया है। मुनिश्री के ससंघ सान्निध्य में बीजाक्षरयुक्त मूल संस्कृत के सिद्धचक्र विधान के क्रमशः ४८, ६४ एवं ८४ मण्डलीय ऐतिहासिक आयोजन सानन्द सम्पन्न हुए हैं। इन विधानों में हजारों हजार श्रद्धालुओं ने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष (ऑनलाइन, इंटरनेट, टीवी- चैनल, प्रमाणिक एप आदि के माध्यम से) रूप से सहभागी बनकर धर्मलाभ लिया है।

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

राष्ट्रमाता बनें
निवेदकः मैं भारत हूँ फाउंडेशन

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation
Khanvel RESORT SILVASSA
09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555
follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com
sales@khanvelresort.com

'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास व बढ़ेगा
सम्मान मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
Samrat Jewellers SJ
नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें
अनोखीलाल नाहर जैन पंकज नाहर जैन
३१ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर पश्चिम, मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
मो: ९८९२८०५०६९

'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास व बढ़ेगा सम्मान
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
भंवरलाल पगारिया जैन
वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

श्री महाप्रज्ञ 'तेरापंथ' के थे भास्कर जैन जगत सदा
वंदन हे गणरत्नाकर! आचार्य महाप्रज्ञजी के जन्म पर्व पर
कोटि-कोटि वंदन

महावीर डाईंग इण्डस्ट्रीज
MFG. Of : SAREE FALL CLOTH
E-14, मण्डिया रोड़, पाली – मारवाड़ (राज.)
रमेश बरड़िया – 94141 20553
रवि बरड़िया – 98290 20553

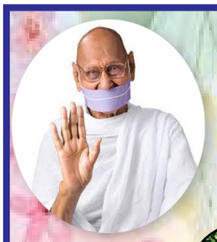
तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के
जन्म दिवस पर गुरुवर के चरणों में
कोटि - कोटि वंदन

UMED SINGH BOKARIA
Mob: 9841026820
Chennai - LADNUN

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Follow for More Updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com /mainbharathun_?

२७ जून

दिगम्बर मुनिश्री प्रमाणसागर जी के
जन्म पर्व पर कोटि-कोटि वदंन्!

-: प्रतिष्ठान :-

आर नथमल बैंकर्स
पांडिचेरी

गौतम ज्वैलर्स
पांडिचेरी

वेलकम ज्वैलर्स
पांडिचेरी

ब्रह्मा ज्वैलर्स
पांडिचेरी

जयपारस ज्वैलर्स
पांडिचेरी

ममता बैंकर्स
पांडिचेरी

गौतम चंद जम्बू कुमार सेठी जैन

50, एजिलनगर, मेन रोड, पांडिचेरी- 605003
फोन : 0413-2210608 मो. 09894040069

With Best Compliments From

SHREE GOURI SHANKAR
JUTE MILLS LIMITED.

Manufacturers Of
Quality Jute Products

Mills: Shyamnagar, 24-Parganas(N),
West Bengal, Bharat - 743127
Mob.: 9830971054

Head Office: 16-A, Brabourne Road,
5th Floor, Kolkata, Bharat-700 001

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES

FEATURES :

- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :

- Counting Display : 4 digits
- Batch Display : 3 digits
- Counting speed : 1000pcs/min
- Hopper Capacity : 300 notes
- Stacker Capacity : 200 notes
- Size of countable note : 50*110-90*190mm
- Power Supply : AC220V±10% 50Hz
- Power Consumption : ≤ 80W
- Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO®
An ISO 9001:2015 Company

Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada,Navimumbai-400705. INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म पर्व पर
चरणों में कोटि - कोटि वंदन

डॉ. रविन्द्र केवलचंद सेठिया
M.D. (Medicine)
मो. 9822055990,8080874691.

सेठिया क्लिनिक

Dr. Pratik Sethiya
Md (Medicine),
DM (Gastroenterologist) ESEGH, UK
Consultant Gastroenterologist,
Hepotologist & Therapeutic Endoscopist

Sethiya Gut And Liver Clinic

निता पार्क, गुंजन सिनेमाजवळ, एअरपोर्ट रोड,
येरवडा, पुणे, महाराष्ट्र, भारत-४११००६
फोन : ०२०-४२८९१५७९, ९७६९९१७७२४

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

राष्ट्रमाता बनें
निवेदकः मैं भारत हूँ फाउंडेशन

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

बापूजी नगर में क्षेत्र के नागरिकों द्वारा बेंगलुरु नगर देवता श्री अण्णम्मा देवी उत्सव हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया। विशिष्ट अतिथि महेंद्र मुणोत ने देवी मां के दर्शन कर आशीर्वाद लिया एवं जरूरतमंद बच्चों में शिक्षण सामग्री वितरित की। आयोजकों ने मुणोत को सम्मानित किया।

जे एस एस अकैडमी ऑफ़ टेक्निकल एजूकेशन बेंगलुरू द्वारा तीन दिवसीय मैनेजमेंट फेस्ट अदृश्ट २०२६ का आयोजन किया गया, जिसमें कर्नाटक के १५० महाविद्यालय के १५०० से भी ज्यादा विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया. कार्यक्रम में खेलकूद बौद्धिक सांस्कृतिक एवं विभिन्न रचनात्मक स्पर्धाओं का आयोजन हुआ. समापन समारोह में मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत, एस बालाजी, सुधीर रायकर एवं कार्यक्रम अध्यक्ष महाविद्यालय के प्राचार्य भीमसेन, विभाग प्रमुख प्रदीप, कार्यक्रम निदेशक नागेश ने विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया।

राजराजेश्वरी नगर स्थित स्काई स्पोर्ट्स अरेना में आयोजित बैडमिंटन स्पर्धा बीके चैंपियनशिप ट्रॉफी के समापन समारोह में विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत करते हुए मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत।

वी के क्रिकेट क्लब द्वारा बसवेश्वरा नगर स्थित बीआर अंबेडकर खेल मैदान में क्रिकेट स्पर्धा जीपीएस सीजन ४ पी के कप का आयोजन किया गया। जिसमें १२ टीम के खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। विशिष्ट अतिथि महेंद्र मुणोत ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है, स्वस्थ रहने के लिए खेलकूद एवं व्यायाम अति आवश्यक है। आयोजकों ने मुणोत सम्मानित किया।

विजयनगर यूनाइटेड कल्चरल एंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन द्वारा हंपी नगर स्थित चंद्रशेखर आजाद खेल मैदान में आयोजित तीन दिवसीय फुटबॉल खेल कूद प्रतियोगिता में विशिष्ट अतिथि महेंद्र मुणोत को सम्मानित करते हुए एसोसिएशन के सदस्य।

श्री कांठा प्रांत जैन ट्रस्ट बेंगलुरु द्वारा रेल्वे खेल मैदान में तीन (मई १४,१५,१६ - २०२६) दिवसीय क्रिकेट स्पर्धा केपिपिएल सीजन ८ मोतीलाल मुणोत कप का आयोजन है, ट्रस्ट के अध्यक्ष उत्तमचंद कोठारी एवं सचिव सिद्धार्थ बोहरा ने मुख्य प्रायोजक महेंद्र मुणोत को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

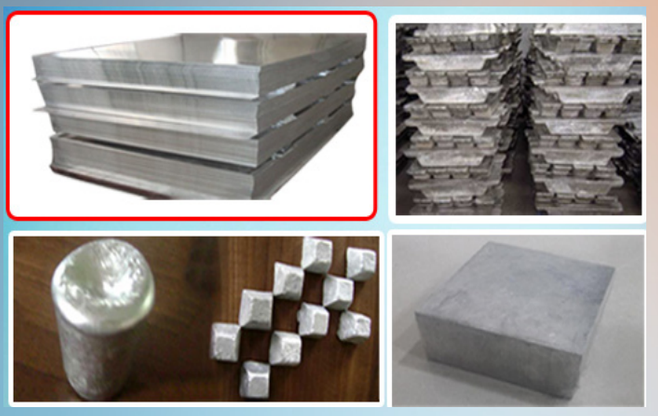

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

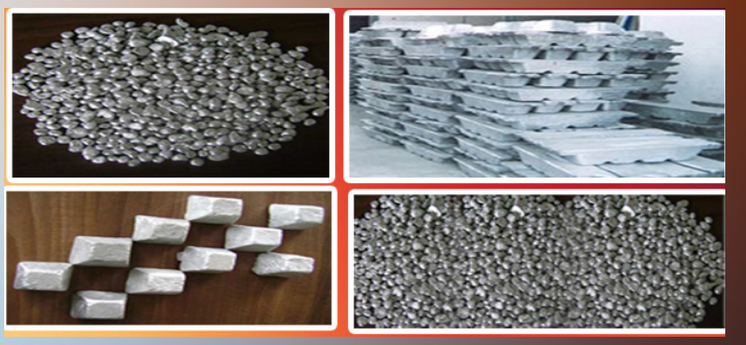

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

राष्ट्रमाता बनें
निवेदकः मैं भारत हूँ फाउंडेशन

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

तेरापंथी सभा की कमान पुनः सुशीला पुगलिया के हाथो में

श्रीडूंगरगढ़ः श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के सत्र २०२६-२०२८ के अध्यक्ष पद पर सुशीला पुगलिया निर्विरोध निर्वाचित हुई हैं। तेरापंथ भवन, धोलिया नोहरा में आयोजित आमसभा में मुख्य चुनाव अधिकारी निर्मल कुमार बागा ने उनके निर्वाचन की आधिकारिक घोषणा की।

अध्यक्ष पद के लिए कुल पांच नामांकन प्राप्त हुए थे। इनमें सुशीला पुगलिया, सुमति पारख, छतरसिंह, प्रदीप पुगलिया और संजय पुगलिया शामिल थे। नामांकन प्रक्रिया के दौरान सुमति पारख ने गुरु इंगित को शिरोधार्य करते हुए अपना नाम वापस ले लिया। इसके बाद छत्तरसिंह बोथरा, प्रदीप पुगलिया और संजय पुगलिया ने भी वरिष्ठजनों की समझाइश और आपसी सहमति से अपने नामांकन वापस ले लिया। २७ मई तक चारों प्रत्याशियों के नामांकन वापस हो जाने से सुशीला पुगलिया एकमात्र उम्मीदवार रह गई थीं। आमसभा में सहायक चुनाव अधिकारी कांति कुमार पुगलिया ने सदन को इसकी जानकारी दी, जिसके बाद मुख्य चुनाव अधिकारी ने उन्हें निर्विरोध अध्यक्ष घोषित कर दिया। गौरतलब है कि सुशीला/सीता पुगलिया का निरन्तर यह दूसरा कार्यकाल है और दोनों ही बार निर्विरोध निर्वाचित हुई है।

नव निर्वाचित सुशीला पुगलिया ने आचार्य महाश्रमण को वंदन करते हुए पूरे समाज का आभार जताया और संघ व संघपति की सेवा में स्वंय को नियोजित करते हुए संस्था व समाज के विकास में स्वंय को सदैव प्रस्तुत रखने की बात कही।

इससे पूर्व आम सदन में मंत्री प्रदीप पुगलिया ने मंत्री प्रतिवेदन का वाचन किया। गत बैठक का वाचन किया गया और हिसाब सदन में रखा गया, इसके बाद आगे निर्वाचन की कार्यवाही के लिए मुख्य चुनाव अधिकारी की कार्यभार सौंपा गया।

घोषणा होते ही सभा में उपस्थित सदस्यों ने ॐ अर्हम' की मंगलध्वनि के साथ उनका स्वागत किया और बधाई दी। इस अवसर पर समाज के अनेक गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।। मुख्य निर्वाचन अधिकारी निर्मल डागा ने सुशीला/सीता पुगलिया को सौंपां नियुक्ति पत्र। श्रावक वरिष्ठ पत्रकार राजू हीरावत ने बताया कि कोलकाता सहित समाज की संस्थाओं की ओर से भी अध्यक्ष बनने पर हार्दिक बधाई दी है। आशा व्यक्त कि आपके कार्य काल में समाज हित में और भी काम होगे और नये आयाम स्थापित होंगे। उल्लेखनीय है कि सुशीला, सीता पुगलिया भामाशाह, राजस्थान गौरव भीकमचंद पुगलिया की धर्मपत्नी है।

अहिंसा के महान प्रचारक महाप्रज्ञ जी के
जन्म पर्व पर लाखों बधाईयाँ

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाश्रमण

Manish Dugar
Mob: 9827091068
OSIA DISTRIBUTOR PVT. LTD.
UB 3-4, Silver Mall, 8A, R.N.T. Marg, Indore,
Madhya Pradesh, Bharat- 452 001,
Ph.: 0731-2516016, 4042311 E-mail: osiaindore@yahoo.com

प्रेक्षा प्रणेता, युग प्रधान, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के
पावन जन्म दिवस पर कोटि कोटि वंदन

रतनलाल सेठिया
केशरीचंद जयसुखलाल सेठिया
सादुलपुर निवासी - शिलाँग प्रवासी
मो : ९४३६१०३८१०

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

राष्ट्रमाता बनें
निवेदकः मैं भारत हूँ फाउंडेशन

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

भारत को 'भारत' ही बोलेंगे INDIA नहीं

ताराचंद सेठिया
पूर्व अध्यक्ष तेरापंथ सभा
रामसिंह का गुड़ा निवासी-चिकमगलूर प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८८६२१२११२

ताराचंद जी आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री के बारे में जितना कहा जाए उतना ही कम है, उन्होंने धर्म को जीवन जीने की कला से जोड़ा है, उन्होंने इससे जुड़े कई अवधान प्रस्तुत किए हैं, जिसमें प्रेक्षा ध्यान और जीवन विज्ञान से मैं काफी प्रभावित हूं। प्रेक्षा ध्यान स्वयं अपनाता हूं और दूसरों को भी प्रेरित करता हूं, जो अपने आप को जानने का सबसे उत्तम मार्ग है। उनके दर्शन करते समय ऐसा अनुभव होता था, साक्षात तीर्थंकर सामने बैठे हैं, एक भक्त भगवान के दर्शन कर रहा है। उन्होंने संपूर्ण तेरापंथ धर्म संघ को एक सूत्र में पिरो कर रखा था। उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन...

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि जब तक सभी पंथ और संप्रदायों की विचारधारा एक नहीं होती, तब तक 'जैन एकता' असंभव सा प्रतीत होता है और इसकी शुरुआत जमीनी स्तर से करनी होगी अर्थात छोटे रूप में इसकी शुरुआत होगी, तभी हम बड़े स्वरूप तक पहुंच सकेंगे। आज सिर्फ 'जैन एकता' कहने की नहीं, करने की आवश्यकता है।

आज की युवा पीढ़ी पहले की अपेक्षा अपने धर्म समाज के प्रति जागरुक है, वह धार्मिक व सामाजिक क्रियाकलापों में रुचि रखते हैं, सहभागी भी होते हैं।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'!

ताराचंद जी मूलतः राजस्थान स्थित पाली जिले के 'रामसिंह का गुड़ा' के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा 'चिकमगलूर' में संपन्न हुई है। सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं, तेरापंथ सभा चिकमगलूर के अध्यक्ष रहे हैं, जैन संघ चिकमगलूर के भी अध्यक्ष रहे हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय गौमाता! जय भारत!

-जिनागम

मनीष दुगड़
व्यवसायी व समाजसेवी
सरदारशहर निवासी-इंदौर प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८२७०९१०६८

मनीष जी आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री के बारे में जितना कहूं उतना कम है, वे इस के युग के राम है। उनके आदर्शों और वाणी को यदि हम समझते हैं और उसी अनुसरण करते हैं तो हमारा भविष्य बहुत ही उज्जवल है, जिनवाणी को हम समझ सकते हैं, हमारे लिए प्रेरणा स्रोत हैं। यदि नई पीढ़ी को इन सब के बारे में बताते हैं, तो एक सुनहरा भविष्य बना सकते हैं। कर्म की निर्जरा भी कर सकते हैं। आचार्य श्री के जब भी दर्शन किए हैं तो ऐसा प्रतीत हुआ है कि सारे सांसारिक बंधनों को छोड़कर गुरुवर के चरणों में ही रहा जाए। आचार्य श्री ने 'प्रेक्षा ध्यान' और 'जीवन विज्ञान' की अवधारणा जो दि, उससे हम जीवन को बदल सकते हैं और एक सुरक्षित जीवन शैली की ओर बढ़ सकते हैं। यह हमारा सौभाग्य रहा कि ऐसे आचार्य श्री के दर्शन लाभ हमें हुए है, आचार्य श्री के उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन...

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'एकता' में बड़ी शक्ति होती है, जो हर असंभव कार्य को संभव कर सकती है और जहां एकता होती है, वहीं समृद्धता व संपन्नता भी होती है, चाहे वह परिवार की हो या समाज की हो या देश की। यदि हमारे समाज में 'एकता' होगी तो दूसरे समाज के सम्मुख भी एक अच्छा संदेश जाता है, यदि संगठित हो कर कोई भी कार्य किया जाए तो उसमें सफलता अवश्य प्राप्त होती है, इसीलिए 'जैन एकता' होना बहुत जरूरी है।

आज के युवा अपने धर्म और समाज से जुड़े, यह पारिवारिक माहौल पर निर्भर करता है। परिवार अपने बच्चों को किस तरह **शेष पृष्ठ २९ पर...**

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम
'भारतद्वार' लिखवायें

पृष्ठ २८ से... की शिक्षा दे रहें हैं, यदि धर्म और समाज की बातें समझा रहे हैं तो वह युवा आवश्यक ही अपने धर्म और समाज से जुड़ते है, यदि युवा पीढ़ी अपने धर्म को जानेंगे, समझेंगे तो उनके लिए आगे का मार्ग बहुत ही आसान हो जाता है।
'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए, 'भारत' नाम में जो अपनापन है, वह अन्य किसी नाम में नहीं, अतः हर भाषा में अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए।
मनीष जी मूलतः राजस्थान स्थित 'सरदारशहर' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'इंदौर' में संपन्न हुई है। यहां आप ऑटोमोबाइल के कारोबार से जुड़े हैं। साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं, इंदौर तेरापंथ सभा के विभिन्न पदों पर रहने के पश्चात वर्तमान में कार्यकारिणी से जुड़े हैं, अन्य कई सामाजिक संगठनों से भी जुड़े हैं। जय भारत! जय गौमाता! **-जिनागम**

कांतिलाल खींवसरा
अध्यक्ष सकल जैन समाज चिकमगलूर
सोजत सिटी निवासी-चिकमगलूर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८४४०४९१७९

कांतिलाल जी आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्यश्री बड़े ही ज्ञानी और विद्वान संत थे, उनका व्यक्तित्व बहुत ही सरल, मिलनसार और अपनत्व से भरा हुआ रहा, उन्होंने धर्म को जीवन जीने की कला से जोड़ा, अपने जीवन का उत्थान किस तरह किया जा सकता है, यह धर्म के माध्यम से समझाया, उन्होंने 'प्रेक्षा ध्यान' की अवधारणा को प्रस्तुत की, इस अवधारणा को हर व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में अपना कर अपने जीवन और आत्म कल्याण की ओर अग्रसर हो सकता है, आचार्यश्री के दर्शन के लाभ कई बार प्राप्त हुए, आचार्यश्री के चरणों में बारंबार नमन...
'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'एकता' होना बहुत जरूरी है। आज जैन समाज की स्थिति बहुत ही खराब हो चली है, अन्य समाज के लोग दूसरी नजरों से देखते हैं। हम सभी जैन एक ही हैं, भले ही सभी के मार्ग अलग हो पर लक्ष्य एक ही है, सभी के मूल में तीर्थंकर महावीर स्वामी के सिद्धांत ही है, उनके ही सिद्धांतों का अनुसरण करते हैं। समाज में एकता स्थापित करनी है तो हमारे गुरु भगवंतों को भी सोचना चाहिए और समाज को जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। 'जैन एकता' होगी तभी हमारा समाज मजबूत होगा, हमारे हर त्यौहार एकसाथ-एकरूप में मनाए जाने चाहिए। आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी भी है और दूर भी हो रही है।
'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत' यही हमारे देश के वास्तविकता है।
कांतिलाल जी मूलतः राजस्थान स्थित 'सोजत सिटी' के निवासी हैं, आपका जन्म व शिक्षा 'चिकमगलूर' में संपन्न हुई है, यहां आप कॉफी निर्माण के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं, सकल जैन सभा चिकमगलूर के अध्यक्ष है, रोटरी क्लब व स्थानकवासी जैन समाज से भी जुड़े हैं। जय भारत! जय गौमाता! **-जिनागम**

सभी मारवाड़ी संगठन को एक मंच पर लाने का प्रयास अभूतपूर्व -मैं भारत हूं फाऊंडेशन

कोलकाता: भारत सरकार से पंजीकृत अंतरराष्ट्रीय संगठन 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' संस्थान के विश्व में फैले पदाधिकारी चाहते हैं कि 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए इंडिया नहीं, साथ ही गौमाता को राष्ट्रमाता का सम्मान मिले, ऐसे राष्ट्रीय अभियान के आह्वानकर्ता मिलकर चाहते हैं की पश्चिम बंगाल की राजधानी 'कोलकाता' में स्थापित सभी मारवाड़ी संस्थाएं एकमंच पर आएं, इसके लिए अभूतपूर्व ऐतिहासिक कार्यक्रम का आयोजन कोलकाता के 'धनोधान्यो ऑडिटोरियम' में २८ जून २०२६ को होने जा रहा है, जिसकी सफलता के लिए कोलकाता की मारवाड़ी सामाजिक संस्थाएं कार्यरत हैं। बतादें कि यह पहला कार्यक्रम होगा जो की मारवाड़ी परिवारों की महिलाएं, पुरुष, बच्चे मिलकर कर रहे हैं, सभी को विश्वास भी है कि 'भारतीय सांस्कृतिक समागम' कार्यक्रम सफल ही नहीं होगा, मारवाड़ी समाज के क्षितिज पर सफलतम सीमाओं को पार कर जाएगा। आयोजित कार्यक्रम में मारवाड़ी घटकों की संस्कृति की प्रस्तुति के साथ संगीतमय राष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, जिसको देखने के लिए राजनीतिज्ञ, उद्योगपति, समाजसेवी, बुद्धिजीवी की भारी संख्या में उपस्थिति रहेगी।

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101
मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

गोशाला झण्डे लगे, गो-माता हर्षाय।
करें गाय की वंदना, गाय बढ़ाती आय।।
गौ माता बनें राष्ट्रमाता अभियान के समर्थन का निवेदन।

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

उत्तर बंग में 'भारत' नाम सम्मान की गूंज बढेगी -बिजय कुमार जैन राष्ट्रीय अध्यक्ष मैं भारत हूँ फाउंडेशन

सिलीगुड़ी: 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' भारत सरकार से पंजीकृत एक अंतर्राष्ट्रीय संस्थान राष्ट्रहित विविध कार्यक्रयों के द्वारा 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए **INDIA** नहीं व 'गौमाता बनें राष्ट्रमाता' अभियान की सफलता के लिए विभिन्नवम भव्यातिभव्य कार्यक्रम करता चला आ रहा हैं, उसी श्रृंखला में मारवाड़ी समाज को एकमंच पर लाने तथा समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय भूमिका को सशक्त बनाने के उद्देश्य से आगामी १३ सितंबर २०२६ को 'सिलीगुड़ी' में आयोजित होने वाले भव्य कार्यक्रम की तैयारियों के अंतर्गत दिनांक ३१ मई २०२६ रविवार को विभिन्न मारवाड़ी घटकों के साथ महत्वपूर्ण बैठकें आयोजित की गईं।

सर्वप्रथम स्थानीय जैन समाज के साथ बैठक संपन्न हुई, तत्पश्चात नकीपुरिया भवन में अग्रवाल समाज तथा महेश्वरी भवन में महेश्वरी समाज के प्रतिनिधियों के साथ विस्तृत चर्चा हुई, इसके अतिरिक्त उत्तर बंग क्षेत्र के विभिन्न समाजों के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं ने भी उपस्थित होकर अपने बहुमूल्य सुझाव प्रदान किए।

बैठकों में कार्यक्रम की संपूर्ण रूपरेखा, उद्देश्य एवं भावी योजनाओं पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया, सभी समाजों के प्रतिनिधियों ने इस आयोजन को पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया तथा इसे 'सिलीगुड़ी' के इतिहास में मारवाड़ी समाज की एकता का एक महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायक आयोजन बताया।

इस अवसर पर समाज की उत्पत्ति, सनातन संस्कृति के मूल तत्व, मारवाड़ी परंपराओं एवं रीति-रिवाजों की गौरवशाली विरासत तथा राष्ट्र निर्माण में समाज की महत्वपूर्ण भूमिका जैसे विषयों पर भी सार्थक चर्चा हुई।

सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि १३ सितंबर को उत्तर बंग के, (सिलीगुड़ी) में आयोजित यह कार्यक्रम एक भव्य एवं ऐतिहासिक आयोजन होगा, जहाँ विभिन्न समाजों के लोग एक साथ उपस्थित होकर एकता, संस्कृति एवं राष्ट्रभावना का संदेश देंगे,इस सफल एवं प्रेरणादायक बैठक में उपस्थित सभी सम्मानित पदाधिकारियों, समाजसेवियों एवं कार्यकर्ताओं का हम हृदय से आभार एवं धन्यवाद व्यक्त करते हैं, आप सभी के सहयोग, मार्गदर्शन एवं सहभागिता से यह अभियान निश्चित रूप से एक नई दिशा प्राप्त करेगा।

एकता संस्कृति सेवा राष्ट्र निर्माण के पथ पर अग्रणीय, जय भारत!

-मंजू अग्रवाल
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मैं भारत हूँ फाउंडेशन

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर गुरुवर के चरणों में कोटि - कोटि वंदन

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाश्रमण

Tarachand Jain Sethia
Mob: 9886212112
Main West Line,Chikmagalur, Karnataka, Bharat - 577 101

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं

राष्ट्रमाता बनें
निवेदक: मैं भारत हूँ फाउंडेशन
मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

उपवास आत्मा की शुद्धि और संयम का महापर्व

'हर माह एक उपवास' महा अभियान में लिया तप-संयम का संकल्प

औरंगाबाद, नरेंद्र पियुष जैन नगर में नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में विराजित अहिंसा संस्कार पदयात्रा के प्रणेता, अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज ससंघ के सान्निध्य में सुभाष चंद्र बोस स्टेडियम में हर माह एक उपवास महाअभियान एवं जैन मंगल महोत्सव का विराट आयोजन श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। आयोजन में हजारों श्रद्धालुओं की अभूतपूर्व उपस्थिति ने पूरे क्षेत्र को धर्ममय बना दिया। विशाल धर्मसभा में आचार्यश्री के ओजस्वी एवं प्रेरणादायी प्रवचनों से प्रभावित होकर सैकड़ों श्रद्धालुओं ने हर माह एक उपवास करने का नियम ग्रहण किया, पूरा स्टेडियम नवकार महामंत्र, जयघोष और धर्म जयकारों से गुंजायमान हो उठा। आचार्य श्री ने कहा कि उपवास केवल भोजन का त्याग नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि, मन की पवित्रता और संयम का महापर्व है। आज का मानव भौतिक सुखों के पीछे भागते-भागते मानसिक अशांति से घिरता जा रहा है, जबकि तप, त्याग और साधना ही जीवन में वास्तविक शांति और आत्मिक आनंद प्रदान करते हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति महीने में केवल एक दिन भी धर्म और तप को समर्पित कर दे, तो समाज और परिवार दोनों में सकारात्मक परिवर्तन निश्चित है। कार्यक्रम के अंतर्गत जन मंगल महोत्सव, मंत्र स्नान एवं जल यज्ञ जैसे धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन विश्व शांति, मानव कल्याण और जनमंगल की भावना के साथ सम्पन्न हुआ। श्रद्धालुओं ने अत्यंत श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ इन अनुष्ठानों में सहभागिता निभाई। प्रवक्ता राहुल जैन ने बताया कि अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज द्वारा आहूत हर मास एक उपवास महाभियान प्रत्येक माह की ७ तारीख को आयोजित किया जाता है, जिससे देश-विदेश के लगभग १२ करोड़ लोग जुड़ चुके हैं। यह अभियान केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, संयम और संस्कार जागरण का वैश्विक आंदोलन बन चुका है। आयोजन में विशेष हीलिंग कल्पवृक्ष हीलिंग फाउंडेशन की प्रियंका दीदी शाह द्वारा आध्यात्मिक हीलिंग सत्र भी आयोजित किया गया, जिसने उपस्थित श्रद्धालुओं को विशेष आध्यात्मिक अनुभूति करवाई। दिशी जैन के मधुर संगीत ने पूरा वातावरण भक्तिमय कर दिया। कार्यक्रम का संचालन नेमिनाथ नवयुवक मंडल अध्यक्ष चिराग दोसी ने किया। महिलाओं, युवाओं और बच्चों में विशेष उत्साह देखने को मिला। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने धर्म प्रभावना के इस महाअभियान को घर-घर तक पहुंचाने तथा समाज में तप, त्याग और संस्कारों की अलख जगाने का संकल्प लिया। पूरे आयोजन स्थल को आकर्षक फूलों, धार्मिक ध्वजों एवं भव्य सजावट से सजाया गया था। अनुशासन, श्रद्धा और भक्ति का अद्भुत संगम पूरे आयोजन में देखने को मिला। अंत में मंगल आरती, धर्म लाभ एवं आचार्य श्री के मंगल आशीर्वाद के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। ऐसी जानकारी प्रचार प्रसार संयोजक नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल औरंगाबाद रोमिल पाटणी सोनकच्छ ने दी है।

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के
जन्म दिवस पर गुरुवर के चरणों में
कोटि - कोटि वंदन

Ashok Pushpa Babel (Jain)
Hardik Renu Babel
Anaya Viona
Mahak Caitee Babel (USA)
Axal
Riddhi Anchit Pandya (USA)

Beauty Jewellers

Manufacture of Fancy bangles

Off.: Gala No. 44 Jai Bharat industrial estate
Goregaon (East), Mumbai-400063

Resi.: B-401, 402 Oberoi Garden,
Thakur Village, Kandivali East,
Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400101
Mob: 98210 69406, 9820027258

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
जिनागम
हम सब जैन हैं

राष्ट्रमाता बनें
निवेदकः मैं भारत हूँ फाउंडेशन

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

प्रेरणा पुंज आचार्य तुलसी

पिछली दो-तीन शताब्दियों में हुए ऐसे अनेकों चयनित महापुरुष, जिन्हें अगली कई शताब्दियों तक आदर्श के रूप में स्मरण किया जायेगा एवं जिनके दिये गये अवदानों व पदचिह्नों पर व्यक्ति चलने का प्रयास करता रहेगा, ऐसे महापुरुषों में एक नाम है 'आचार्य तुलसी'। संक्षिप्त परिचय में तो कहने को वे जैन धर्म के एक सम्प्रदाय 'तेरापंथ' के नवम आचार्य थे, परन्तु कार्यों तथा उनके परिणाम व अर्थ इतने विशाल थे, कि वे अपने सम्प्रदाय के घेरे से निकलकर युगप्रधान आचार्य बन गये, विश्व मानव बन गये, जिससे मानवता ने त्राण पाया। महान व्यक्ति का मापदण्ड यह नहीं है कि उसने कितनी धन-सम्पत्ति अर्जित की एवं उससे कितने बड़े व आलीशान मकान बनाये, बल्कि महापुरुष होने की सुगन्ध उसमें आती है की जिसने अपने प्रेरक व्यक्तित्व से कितने लोगों को अच्छाई के लिये प्रेरित किया, जो स्वयं समाज के लिये उपयोगी एवं समाज के अन्य लोगों के लिये आदर्श बन सके।

विद्वता व मानवीय गुणों के धनी आचार्य तुलसी ने हजारों-हजारों व्यक्तियों को आकर्षित किया और अहिंसा, सत्य व नैतिकता आदि सद्गुणों से आप्लावित कर उसे आदर्श जीवन का मार्गदर्शन दिया, एक-एक व्यक्ति को आकर्षित कर उन्हें अपना बनाने की कितनी कला थी, उसके मैं कुछ संस्मरण देना चाहूंगा- बजाज समूह की अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता में मुझे प्रथम पुरस्कार मिला। प्रसन्नता के आवेग में यह बात मेरे पिताजी ने आचार्य तुलसी को भी बताई, एक रात आचार्य प्रवर ने मुझे अणुव्रत के बारे में काफी कुछ बताया, समझाया एवं दूसरी रात इस क्रम में मुझे कहा कि तुम्हें तो लिखने का शौक है, 'अणुव्रत' के बारे में एक लेख लिखकर लाओ। गुरु का आदेश, मैंने प्रफुल्लित होकर, अपनी क्षमता व भावना के अनुरूप लेख तैयार कर पूज्यवर को दिखाया, लेख देखकर बोले, कल तुम्हें इसे प्रवचन में पढ़कर सुनाना है, दूसरे दिन अपने प्रवचन से पहले, मेरी कहानी प्रतियोगिता की बात बताकर मुझे 'अणुव्रत' के बारे में बोलने का आदेश दिया। लेख हृदयंगम था, मैंने अणुव्रत के सम्बन्ध में कुछ प्रस्तुति दे दी। एक तीर से तीन-चार निशाने लगे-

(१) मैंने कहानी लिखी थी, लेख भी लिख दिया, कुछ हौसला खुल गया एवं बाद में लिखने लग गया।

(२) प्रवचन में पहली बार बोलकर स्वयं को गौरवान्वित तो महसूस किया ही, अवसर आने पर बोलने व भाषण देने की कला विकसित होने लगी।

(३) 'अणुव्रत' के बारे में जानकर धीरे-धीरे 'अणुव्रत' कार्यक्रमों व काम से जुड़ने लगा।

(४) इन सबकी वजह से मैं सभा-संस्थाओं से जुड़कर सम्मानित कार्यकर्ता बनने की ओर अग्रसर होने लगा।

इससे जाना जा सकता है कि महान व्यक्ति के सोच से एक अदने से अनजान किशोर को किस तरह से एक मामूली सा इंगित देकर, संकरी गली से चौराहे पर ला दिया। अगला संस्मरण बहुत ही रोचक व व्यक्तिगत है-

मेरा बचपन का नाम विजय सिंह था। पड़िहारा में मेरी हम उम्र यानि २-३ साल के फर्क के विजयसिंह नाम के सात लड़के थे एवं सभी सुराणा। आचार्यप्रवर 'पड़िहारा' में ही विराजित थे एवं कार्यवश मुझे बुलाने हेतु किसी श्रावक को कहा तो उसने पूछ लिया- ''कौन सा विजयसिंह''। आचार्य प्रवर उसकी तरफ देखने लगे, तो उसने कहा यहां पर सात विजयसिंह हैं, आप किसे याद फरमा रहे हैं। बाद में जब मैंने दर्शन किये तब फरमाया ''यह क्या झमेला है, इससे तुम्हारी पहचान कैसे बनेगी।'' मेरे पास भी जवाब नहीं था, उनकी ओर ही निहारता रहा। दो-तीन मिनट सोचकर पुन: बोले ''ऐसा करो तुम अपना नाम 'विजयराज' परिवर्तित कर लो।''

लाखों व्यक्तियों के संघ के सम्बन्ध में सोचने वाला व चलाने वाला एक साधारण से युवक के बारे में इतना सोचे व परामर्श देवे, ऐसा किसी महान व्यक्ति का ही चिंतन हो सकता है। मैं नतमस्तक हो गया। कहना नहीं होगा कि मैंने उनके आर्शीवाद से कुछ समय बाद ही अपना नाम विधिवत 'विजयराज' परिवर्तित कर लिया। मुझे समाधान भी मिला गुरु का आर्शीवाद फलित भी हुआ।

एक घटना का विवरण और प्रस्तुत करना चाहूंगा, सन् १९७४ का चातुर्मास 'दिल्ली' में था। जयाचार्य जी की शताब्दी वर्ष का अवसर था। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् ने जयाचार्य जी की शताब्दी पर एक स्मारिका 'जय स्मृति' के नाम से प्रकाशित करने का निर्णय लिया, जिसका दायित्व मुझ पर था। स्मारिका गोविन्दजी बाफणा की प्रेस में छप रही थी एवं मेरे अच्छे सहयोगी थे, हम दोनों उस स्मारिका में तेरापंथ के सभी नौ आचार्यों की फोटो छापने का निर्णय लिया, परन्तु समस्या यह थी कि तृतीय आचार्य रायचन्दजी व पंचम आचार्य मघवागणी का उस समय कोई प्रचलित फोटो उपलब्ध नहीं था, हम दोनों ही किंकर्तव्यमूढ थे कि क्या किया जाये? आचार्य प्रवर से समस्या निवेदित की, आंख मूंदकर कुछ सोचकर कुछ देर बाद बोले, अन्य ४-५ आचार्यों की कैसे हुई, वैसे ही हो सकती है, हम पूरा तो नहीं समझ पाये परन्तु कुछ सूत्र मिल गया, उसी स्मारिका में सभी सन्तों की उपलब्ध फोटो भी छाप रहे थे, उन सैकड़ों सन्तों की फोटो में से ४-५ पसन्द की गयी फोटो में से समायोजित करके आचार्य रायचन्द व आचार्य मघवागणी की फोटो तैयार कर, उस स्मारिका में छापने का निर्णय लिया, उन दोनों समायोजित फोटो को कुछ डरते-डरते एवं मन में कई शंकायें लेते हुए एक रात मैंने आचार्यप्रवर को अकेले में निवेदित किया। कुछ देर उन्हें देखते ही रह गये एवं हास्ययुक्त प्रफुल्लता से हमारी करतूत को सराहा व आशीर्वाद दिया, जिसकी हम कल्पना नहीं कर सके थे, यह बताते हुए मुझे गौरव होता है कि सभी नौ आचार्यों की हर पेज में एक-एक फोटो पहली बार उसी स्मारिका में छपी थी, उसके बाद तो वही सब फोटो प्रचलित हो गई। आचार्य श्री का दिया हुआ सूत्र किस तरह दिमाग में रेखांकित होकर, चित्रमय हो गया, यह उनके आर्शीवाद व महानता का ही फल है।

मेरे प्रेरणा पुंज, पूज्य गुरुदेव को उनके शताब्दी वर्ष पर हृदयाशिक्त शत: शत: वंदन।

- विजयराज सुराणा

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

चोरडिया सांताक्रूज़ युवक परिषद् अध्यक्ष

मुंबई: तेरापंथ युवक परिषद सांताक्रूज़ की वार्षिक साधरण सभा कमलेश मेहता की अध्यक्षता में संपन्न हुई। मंत्री शैलेश बेताला ने वर्षभर के

कार्यों का लेखा जोखा दिया। कोषाध्यक्ष शुभम नौलखा ने आय व्यय का विवरण प्रस्तुत किया जिसे पारित किया गया। इसके बाद चुनाव अधिकारी राजेश चौधरी एवं राजेंद्र नौलखा ने ओमप्रकाश चोरडिया को २०२६-२७ के लिये अध्यक्ष नियुक्त किया। चोरड़िया ने अपनी कार्यकारिणी में मंत्री दिलीप बाफना, उपाध्यक्ष विकास धाकड़, मुकेश बाफना, सहमंत्री अनिल चपलोत विकास कोठारी, कोषाध्यक्ष मनीष चोरडिया और संगठन मंत्री अभिषेक सुराना को नियुक्त किया। किशोर मंडल प्रभारी जयेश चोरड़िया, सहप्रभारी सिद्धार्थ सिंघवी, प्रथम सोलंकी और संयोजक जैनिल परमार, सहसंयोजक वीर गन्ना, मयंक धींग को नियुक्त किया।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ

खुले आकाश में जन्म लिया,
ग्रहों से सीधा सम्पर्क किया,
दस वर्ष की वय में सन्यासी बन,
कालू, तुलसी का शिष्यत्व लिया।
ज्ञान गंगा जल्दी ही बहने लगी,
नित नये-नये मुकाम छुये,
आगम सम्पादन, प्रेक्षाध्यान जैसे
नित नये अवदान दिये।
तेरापंथ के बने आचार्य,
प्रकाण्ड पंडित ज्यूं प्रसिद्ध भये,
अमर रहो हे महाप्रज्ञ,
हर युग तेरी ये गाथा कहे।

-पूनम चंद सुराणा

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Intensive

Investment Banking ◆ Family Office ◆ NBFC

www.intensivefiscal.com

Recent Capital Market Transactions

WAAREE One with the Sun — **Waaree Energies**

VISHAL MEGA MART — **Vishal Mega Mart**

lenskart — **Lenskart**

Park Hospital Advanced Super Speciality — **Park Hospitals**

BIKAJI — **Bikaji**

STYLE BAAZAR — **Style Baazar**

ACUTAAS — **Acutaas Chemicals (Ami Organics)**

MIDWEST — **Midwest**

YATHARTH SUPER SPECIALITY HOSPITALS GET BETTER — **Yatharth Hospitals**

alltime — **All Time Plastic**

BALAJI WAFERS

GENERAL ATLANTIC

Private Equity Transaction

BALAJI WAFERS — **Balaji Wafers**

GOPAL NAMKEEN — **Gopal Snacks**

Our Service Offerings

- Initial Public Offer (IPO)
- Pre-IPO Placement
- Right Issue/ Buy Back
- Valuation & ESOP
- Private Equity
- M&A/ Strategic Acquisition
- Amalgamation & Demerger
- Takeover/ Open Offer
- QIP Placement/Block Deals
- Wealth Management & Advisory
- Debt Syndication Financial
- Engineering

INTENSIVE FISCAL SERVICES PVT. LTD.

R.O.: 914, Raheja Chambers, Free Press Journal Marg, Nariman Point, Mumbai - 400021

Tel: +91-22-22870443 / 44 / 45.
Contact Person: Virendra Bajaj - +91 96992 92100

Email: admin@intensivefiscal.com,
Website: www.intensivefiscal.com

सम्पादक-बिजय कुमार जैन

जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

हम सब जैन हैं

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
पत्रिका मुफ्त

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

वार्षिक शुल्क
२१००/-

मात्र रु. १५०/- में, प्रति महिना

पंजीकृत कार्यालय

गेलॉर्ड पब्लिकेशन्स प्रा.लि.

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

अहिंसा
परस्परोपग्रहो जीवानाम

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2024-26
Published on 09th June 2026 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

ADD Gel®
LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

24 SHADES

CALLIGRAPHY
GIFT OF CREATIVITY

Best Gift for Birthday

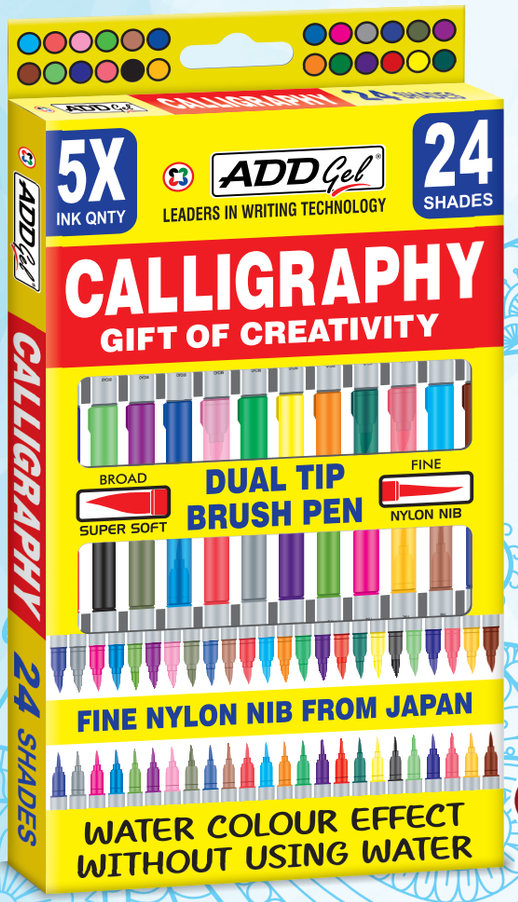

DUAL TIP BRUSH PEN

FINE NYLON NIB FROM JAPAN

MRP ₹450/- PER PACK

BROAD
SUPER SOFT
FINE
NYLON NIB

Make in India

www.shop.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598